भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 12 | जुलाई-अगस्त (संयुक्तांक) 2011 | अंक 7-8

किताब ने कहा

बिना दृष्टिवालों को देती नज़र हूँ,
पढ़ो तुम मुझे ज्योति का मैं सफर हूँ।

हूँ मैं ज्ञान-विज्ञान का इक खजाना
सफर साथ मेरे है बनता सुहाना।
कठिन मुश्किलों का समाधान हूँ मैं
कभी हूँ कहानी, कभी हूँ तराना।
अकेले न तुम, पास में मैं अगर हूँ, पढ़ो तुम मुझे....

है मेरा ये संसार सबसे निराला
जो मन में बसा लो तो फैले उजाला।
कभी मुझसे तुम दिल लगाकर तो देखो
सँवर जाएगा तेरा कल आने वाला।
अनूठे सृजन के सिखाती हुनर हूँ, पढ़ो तुम मुझे...

युगों की कहानी हूँ, इतिहास हूँ मैं,
किरण ज्ञान की, दिल का जज्बात हूँ मैं।
नई चाह जगती, नई राह खुलती
मैं जीने की इच्छा हूँ विश्वास हूँ मैं।
मैं भटके हुओं को दिखाती डगर हूँ, पढ़ो तुम मुझे....

मैं घर बैठे दुनिया दिखा दूँगी तुमको
सलीके से जीना सिखा दूँगी तुमको।
खड़े सामने प्रश्न के व्यूह जो हैं
चुनौती से लड़ना सिखा दूँगी तुमको।
मैं अन्याय से अनवरत इक समर हूँ, पढ़ो तुम मुझे....

—डॉ० वशिष्ठ अनूप

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह
तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

क्षेत्र, बीज और अंकुर

बहुत दिनों बाद झूम के बरसे आषाढ़ के पहले बादल, सिंच गयी धरती, खिल उठे वन-उपवन। किसानों ने हल उठाया, खेतों को जोतकर बीज डाले। रिमझिम फुहारों के बीच पेड़ों पर हिंडोले डालकर आकाश को छू लेने की प्रतिस्पर्धा में पेंगे मारने लगीं युवा-मन की अभिलाषाएँ...!

इधर गर्मियों की छुट्टियों के बाद खुल गये हैं स्कूल-कॉलेज। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक प्रवेश-परीक्षाएँ एवं निर्धारित सीटों के लिये दाखिले भी हो चुके हैं, कक्षा-वर्ग आदि व्यवस्थित करते हुए धीरे-धीरे शुरू हो चुका है अध्ययन अध्यापन का नया सत्र। सरकारी-तौर पर बहु-प्रचारित 'सर्व-शिक्षा अभियान' के तहत दलित-वंचित-कामगार वर्ग के बच्चों के कदम भी बढ़ने लगे हैं स्कूलों की ओर। अब से कुछ दिनों पहले तक इस वर्ग के बच्चों में पढ़ने की हसरत तो थी पर अवसर न थे। सुविधा प्राप्त वर्ग के बच्चों को लकदक कपड़ों में बस्ता लिये स्कूल जाते देखकर ये कामगार बच्चे मन मसोसकर रह जाते और फिर जुत जाते अपनी रोटी के जुगाड़ में। किन्तु इस सरकारी-योजना के अन्तर्गत गरीब बच्चों के लिये मुफ्त में मिलने वाली कॉपी-किताब और एक जून के भोजन का इन्तज़ाम एक बड़ी नियामत है। इस 'सर्व-शिक्षा' या 'प्रौढ़-शिक्षा' की योजनाओं से देश में साक्षरता का प्रतिशत तो ज़रूर बढ़ रहा है किन्तु विलुप्त है शिक्षा और शिक्षा के संस्कार।

वस्तुतः आरम्भिक स्तर पर माता-पिता के साथ-साथ प्राथमिक-वर्ग के शिक्षक की भूमिका ही सबसे ज़्यादा कारगर होती है। ये वो शिल्पकार हैं जो कच्ची मिट्टी को रूपाकार देते हैं, संस्कारों के साँचे में ढालकर शैक्षणिक-अनुशासन की धीमी-आँच में उसे तपाते हैं। इस दरम्यान निर्धारित पाठ्यक्रम और सामाजिक परिवेश के बीच इस कच्ची मिट्टी में भाषा, धर्म, संस्कृति, देश, जाति और परम्परा के बीजों का अंकुरण होने लगता है। इस अंकुरित होते पौधे की सार-सँभाल और अभिसिंचन करने वाला कृषक तो यही शिक्षक होता है जो इस बीजांकुर को पल्लवित, पुष्पित होने के लिये संस्कारों की जैविक-खाद प्रदान करता है। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में स्वयं विडम्बनाग्रस्त है यह कृषक/शिल्पकार/शिक्षक। सरकारी और निजी विद्यालयों में स्थायी, अस्थायी, अंशकालिक आदि विभिन्न स्तरों पर नौकरी बजाते हुए यह शिक्षक भी निर्धारित पाठ्यक्रम की सीमा में केवल अपनी 'ड्यूटी' निभाता है, विद्या-दान के साथ संस्कार-दीक्षा का दायित्व अब उसकी प्राथमिकता नहीं। दूसरी ओर प्राथमिक-माध्यमिक स्तर की वर्तमान शिक्षा-पद्धति मात्र 'होमवर्क' के बोझ, तोता-रटन्त और अंक-प्रतिशत में सीमित हो चुकी है और इस मशीनी शिक्षा के बोझ तले दबा हुआ तनावग्रस्त विद्यार्थी भी क्रमशः आत्मकेन्द्रित, संस्कार-हीन बनता चला जाता है। अवकाश के क्षणों में उसकी शरारतें भी 'वीडियोगेम्स' की तरह परपीड़क और हिंसक बनती जाती हैं। सामाजिक-परिवेश में परिव्याप्त अनैतिकता, अराजकता और आर्थिक-दबाव के बीच परिवार, बच्चे, शिक्षक और विद्यार्थी सभी एक अदृश्य-तंत्र द्वारा संचालित हो रहे हैं।

दरअसल राष्ट्रीय-शिक्षा के नीति-निर्माताओं ने हमारी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा को सर्वथा आधुनिक बनाने की दृष्टि से उसे ज्यादा से ज्यादा सूचनापरक और उपयोगी बनाने में

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

ही अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल किया है। इस वर्ग की शिक्षा के लिए सरकार ने राष्ट्रीय बजट का लगभग चार प्रतिशत व्यय स्वीकृत किया है। इन सबके बावजूद यह शिक्षा-पद्धति केवल तकनीकी-सूचनाओं से भरपूर एक 'कम्प्यूटराइज़ड रोबोट' तैयार करती है जिसमें नहीं होते शैक्षणिक-संस्कार, राष्ट्रीय-स्वाभिमान एवं सर्जनात्मक अंत:प्रेरणा।

पश्चिम की तथाकथित 'वैश्वक अवधारणा' एक नीतिगत प्रचार है जिसके अनुसार उन्हें फायदेमंद बाज़ार की जरूरत है जहाँ कच्चा माल और सस्ता श्रम भी आसानी से मिल सके। इसी सोच का प्रयोग वे अपने द्वारा शासित पहले के उपनिवेशों में करने का प्रयत्न कर रहे हैं और इस क्रम में भारत उनकी सबसे बड़ी शिकारगाह है। इस क्रम में भारतीय राजनीति, व्यापार और बाज़ार धीरे-धीरे उनके शिकंजे में आते जा रहे हैं। पश्चिम का भोगवाद और भौतिक आकर्षण आज के भारतीय समाज में परिव्याप्त हो चुका है। आज का हमारा परिवार विखण्डित होकर एकांगी होता जा रहा है। इसी परिक्षेत्र में अंकुरित नयी पीढ़ी को 'रोबोट' बनाकर नव-गुलामों की फौज तैयार करने का छद्म षडयंत्र चल रहा है जिसमें शामिल हैं उनके पुराने मित्र राजनयिक-घराने, औद्योगिक-घराने एवं कतिपय क्रीतदास-बुद्धिजीवी, संस्कृतिकर्मी, मीडिया-कर्मी। इस नूतन साम्राज्य की संरचना के लिए नये गुलामों/रोबोट-सैनिकों की आवश्यकता है जिसे पूरा करने के लिए प्रस्तुत होंगे नयी पीढ़ी के नौजवान। इसीलिए कच्ची उम्र की अवधि में ही बच्चों को अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति, परम्परा और परिवेश से वंचित करने की योजनाएँ एक-एक कर लागू की जा रही हैं। इस योजना का एक चरण है बच्चों की शिक्षा और वर्तमान शिक्षा-पद्धति के सूत्र इसी नवउपनिवेशवादी साम्राज्य-निर्माताओं द्वारा संचालित किये जा रहे हैं।

इन विषम परिस्थितियों के बीच हमारे शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, जननेताओं को पुनर्विचार करना होगा और राष्ट्रीय शिक्षा-नीति तैयार करनी होगी। जिसके अन्तर्गत नवीनतम तकनीक, सूचनाएँ, वैज्ञानिक आविष्कार और पारम्परिक संस्कार हों, जो हमें हमारे अतीत की बुनियाद और वर्तमान की उपलब्धियों से जोड़ सके। विश्व-स्तर पर भी योग्यता के मानक हमारे अपने हों न कि आयातित। इन विभिन्न घटकों से युक्त शैक्षणिक परिवृत्ति के बीच हमारी जन-जाति का अन्तिम व्यक्ति भी अपनी पहचान बना सके तभी पूरे होंगे समग्र राष्ट्रीय-विकास के संकल्प और स्वतंत्र-चेता भविष्य की संरचना सम्भव होगी एवं पूर्ण होगा आनेवाली पीढ़ियों का विद्याव्रत—

''विद्ययाऽमृतमश्नुते'

सर्वेक्षण

● **बहुत शर्म आती है :** रोज़ाना शर्मसार करने वाली खबरों के बीच हाशिये पर खोयी हुई खबर के मुताबिक ''पिछले दिनों एक भारतीय नागरिक श्री सतीश बिड़ला ने सूचनाधिकार कानून के तहत भारत सरकार के गृह मंत्रालय से यह जानकारी माँगी थी कि हमारे देश का नाम क्या है? मंत्रालय ने उत्तर दिया कि इस सम्बन्ध में उसे कोई जानकारी नहीं।'' हाशिये की इस खबर को पढ़ते ही ऐसा लगा कि जैसे कोई हमारी कालर पकड़ कर पूछ रहा है कि कौन हो तुम, तुम्हारी अस्मिता क्या है, किस खेत की मूली हो तुम?

● ● **सत्य की त्रासदी :** सत्-असत् के प्राचीन द्वन्द्व का वर्तमान निदर्शन है पत्रकारिता और असामाजिक-तंत्र का सतत संघर्ष। मुम्बई में दिनदहाड़े दो बाइकसवारों ने निर्भीक पत्रकार ज्योतिर्मय डे की सरेआम हत्या कर दी और अब तक पकड़ से बाहर हैं। मीडिया के लगातार दबाव के चलते व्यवस्था ने घड़ियाली आँसू बहाये, अपराधियों को भीतर करने का भरोसा दिलाया, किन्तु हुआ क्या? राजनीति, पूँजी और अपराध की त्रयी से निर्मित समांतर व्यवस्था-तंत्र/माफिया-जगत की खबर लेने वाले ज्योतिर्मय ने अपने आलेखों और पुस्तकों द्वारा इस तंत्र का रहस्य-भेदन करने का प्रयास किया और अपनी जान देकर अपने पत्रकारिता-धर्म का मूल्य चुकाया किन्तु असली हत्यारे अब भी पकड़ से बाहर हैं। महज़ सन्देह जताते और एक-दूसरे पर उँगलियाँ उठाते हुए कब तक चलता रहेगा यह चूहे-बिल्ली का खेल, कुछ पता नहीं।

देश के अलावा पड़ोस में भी पत्रकारों को निशाना बनाने का क्रम जारी है ताकि आतंक की धमक कायम रहे। इसी सिलसिले में लन्दन से निकलने वाले 138 साल पुराने अखबार 'न्यूज़ ऑफ द वर्ल्ड' का बन्द होना भी इसी त्रासदी का एक नाम है। अपराधी तकनीकों से उपजी 'फोन हैकिंग' के नव-राजनयिक-आपराधिक साँठगाँठ से बदनाम हुए पत्र ने हमेशा के लिए मौन हो जाना ही उचित समझा। आखिर कब तक आतंकित रहेगा निर्भीक लेखन, कब तक मौन रहेगी वाणी और सत्य का गला घोंटा जाता रहेगा?

● ● ● **सलामे-आज़ादी :** कितना अजीब लगता है कि विस्फोटक-आतंक के बीच अपनों के शव ढोते, घायलों को अस्पताल पहुँचाते हुए जब जन-जीवन त्राहि-त्राहि कर रहा हो उन्हीं क्षणों में विभिन्न मीडिया चैनल्स पर प्रायोजित कार्यक्रम द्वारा नृत्य-गान भी चल रहा हो, रैम्प पर सुन्दरियाँ फैशन परेड कर रही हों, हॉलीवुड-बॉलीवुड मनोरंजन कर रहे हों। यानी कि रिमोट-संचालित आतंक भी उसी प्रायोजित कार्यक्रम की तरह हमारे लिये रंजन-परक बना दिया जाय। इन्हीं विडम्बनाओं के बीच न्यूज़ चैनल पर वक्त की नज़ाकत भाँप कर घड़ियाली आँसू बहाते हुए नेतागण आतंक का मुकाबला करने का संकल्प दुहराते हुए मृत्यु के मुआवज़े की घोषणा करते हैं। इन तमाम विषमताओं के बीच एक सार्वभौम स्वतंत्र देश अपने स्वातंत्र्य-उत्सव का आयोजन करता है। राष्ट्रध्वज को सलामी देकर रुद्ध-कण्ठ से 'जय-हो, जय-हो' गाते-गाते अपने अंतर्तम में करुण-चीत्कार कर उठता है कवि-मन—

निसार मैं तेरी गलियों पे ऐ वतन, कि जहाँ
चली है रस्म कोई न सर उठा के चले,
जो कोई चाहने वाला तवाफ़ को निकले
नज़र झुका के चले, जिस्मो-जाँ बचा के चले।

—परागकुमार मोदी

आलोचना और रचना की उलझनें

मुद्राराक्षस

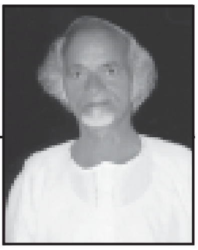

मुद्राराक्षस आलोचक के रूप में हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में 1953 में प्रकाशित अपने लेख 'प्रयोगवाद की प्रेरणा' से ही मशहूर हो गए। उनके मूल नाम 'सुभाष' के बजाय युगचेतना सम्पादक डॉ० देवराज ने यह लेख 'मुद्राराक्षस' नाम से छापा था। दर्शन, समाजशास्त्र और साहित्य के गम्भीर अध्येता के रूप में आलोचना के क्षेत्र में वैचारिक गहनता के लिए वे अद्वितीय प्रतिभा के तौर पर सामने आए।

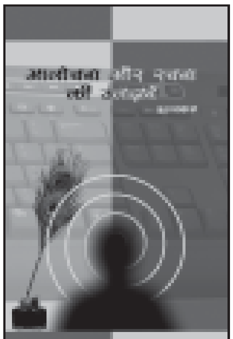

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 212

सजिल्द : 978-81-7124-820-9 • रु० 250.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

सहानुभूति, स्वानुभूति और दलित

साठ के दशक में अमरीका में अश्वेत समुदाय में उठी बेचैनी और अपनी अस्मिता के लिए किए जा रहे अश्वेतों के संघर्ष के दौर में समाजशास्त्री सेण्ट क्लेयर ड्रेक ने इस जातीय भेदभाव का व्यापक अध्ययन किया था। अपने एक निबन्ध में उसने कविता और कथा-साहित्य में अश्वेतों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण लेखन पर बहुत जरूरी और दूरगामी अर्थों वाली टिप्पणी की थी। ड्रेक ने लिखा था—''कुछ उपन्यासकारों और कवियों के लिए अश्वेतों की तकलीफें एक रूमानी वास्तविकता होती हैं।''

सेण्ट क्लेयर ड्रेक की यह टिप्पणी हिन्दी में पिछले दिनों उभरे दलित-विमर्श के एक गम्भीर विवाद के सम्बन्ध में भी हमें याद रखनी चाहिए। इस बहस की शुरुआत अब से कुछ बरस पहले हुई थी जब कुछ दलित लेखकों ने निराला और प्रेमचंद के दलित-विषयक लेखन को खारिज किया था। निश्चय ही दोनों लेखक हिन्दी के वर्तमान साहित्य के निर्विवाद शिखर हैं और कई लेखकों ने इस बात पर क्षोभपूर्ण आपत्तियाँ दर्ज की थीं कि क्यों वे दलित लेखक नहीं कहे जा सकते?

प्रेमचंद और निराला दलित साहित्य के प्रतिनिधि नहीं हैं, इस बात को लेकर हिन्दी में जितनी तीखी बहस हुई थी उससे कहीं ज्यादा उत्तेजक बहस इस प्रश्न पर हुई कि दलित-साहित्य सिर्फ दलित ही लिख सकता है? कुछ लेखकों ने इस सवाल को हँसी में उड़ाने की कोशिश की तो कुछ औरों के अनुसार यह उपेक्षायोग्य मुद्दा था। कुछ असन्तुष्ट लेखकों ने इसे जातिवाद का भड़काया जाना भी कहा और कुछ लेखक इतने ज्यादा क्षुब्ध रहे कि उन्हें दलित विमर्श सीधे मण्डल रिपोर्ट जारी होने की घटना जैसी लगा और बेहद चिन्तित स्वरों में उन्होंने कहा कि वे साहित्य में आरक्षण की कोशिशें नहीं चलने देंगे। उनका यह दावा भी था कि दलितों की खराब स्थिति से वे खुद चिन्तित हैं और इस पर लिखते हैं। यह सच है, वे स्वीकार करते हैं कि इतिहास में कुछ समाजों में दलितों के प्रति अन्याय हुआ है लेकिन अब वह स्थिति बदल चुकी है क्योंकि खुद दलित भी बहुत ऊँचे उठ गये हैं और कई जगह वे अन्याय में अगुवाई भी करते हैं।

दलित विमर्श के ऊपर दिए अनेक सवाल राजनीतिक और सांस्कृतिक हैं। हमारे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण यह सवाल है कि क्या दलित-साहित्य दलित ही लिख सकता है? और शायद यह भी कि क्या दलितों और गैर-दलितों में सहज रिश्ता सम्भव है अर्थात् उनमें कोई सांस्कृतिक संवाद सम्भव है? एक इन सबसे भी ज्यादा बुनियादी प्रश्न भी—क्या साहित्य सहानुभूति से भी लिखा जाता है और अगर लिखा जाता है तो उसका रचनात्मक मूल्य क्या हो सकता है? स्वानुभूति या जिसे कभी भोगा हुआ यथार्थ जैसी विवेकभ्रष्ट अवधारणा से चिह्नित किया गया था, क्या साहित्य की रचनात्मक उपलब्धि को परिभाषित करती है?

यह आश्चर्य की बात है कि जो लेखक दलित जन-समुदाय से 'सहानुभूति' रखता है वह दलित से अपनी सहानुभूति का दावा तो करता है पर हिन्दू संस्कृति के उन औजारों के विरुद्ध कोई कारगर अभियान नहीं छेड़ता जिन औजारों से दलित-उत्पीड़न किया जाता है। दलित-उत्पीड़न या दलित जनसमुदाय की दुर्दशा किसी हिन्दू का व्यक्तिगत चुनाव नहीं होता। वह इसलिए दलित-उत्पीड़न नहीं करता कि वह सहसा असामाजिक हो जाता है। किसी डकैत या माफिया का आचरण उसकी अपनी व्यक्तिगत अभिरुचि होती है और वह कभी भी समाज के कानून से बाँधा जा सकता है। दलित- उत्पीड़न की स्थिति ऐसी नहीं है। दलित-उत्पीड़न को बाकायदा पाँच हजार बरस के इतिहास वाले एक धर्मतन्त्र का समर्थन मिला हुआ है। वेदों में तो सिर्फ इस बात का इतिहास ही है कि यज्ञ करने वाले समाज की विरोधी संस्कृति के लोग मारे गए और उनकी सम्पत्ति छीनी गई। एक सूक्त में यह कहा गया कि शूद्रों का जन्म सबसे निचली स्थिति से हुआ पर शतपथ और ऐतरेय जैसे ब्राह्मण-ग्रन्थों ने सीधे-सीधे आदेश दिए कि शूद्रों को दास बना कर सेवा कराओ, उन्हें अच्छा खाना, अच्छा रहना मत दो, उन्हें पढ़ने-लिखने भी न दो। गौतम, आपस्तम्ब, वशिष्ठ, बोधायन, हिरण्यकेशि, हारीत, विष्णु, मनु आदि के सौ से ऊपर धर्मसूत्र हैं जिनमें अमानवीय व्यवहार शूद्रों के साथ हो इस बात की हिदायतें दी गई हैं। पर 'सहानुभूति' रखने वाले निराला जैसे लेखकों के जातिप्रथा को लेकर इन ग्रन्थों की निन्दा करने के बजाय जिस तरह ब्राह्मणत्व को महिमामण्डित करते हुए शूद्र समाज के प्रति घृणास्पद बयान दिए हैं वे आश्चर्यजनक हैं।

निराला की 'चतुरी चमार' जैसी रचनाओं को लेकर उन्हें उदार दलित लेखन का श्रेय दिया जाता रहा है। 'कुल्लीभाट' या उनकी कई कविताओं में भी यह सहानुभूति झलकती है। यहाँ हमें याद करना चाहिए कि बीस के दशकों में उत्तर भारत में, खास तौर से आर्य समाज ने गैर-सवर्णों को जनेऊ पहनाना शुरू किया था। यही वह समय था जब महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में दलित समाज ने सवर्णों की दासता से मुक्ति के अभियान शुरू किए थे।

ऐसे समय में बहुत-सी रूढ़ियों के प्रति विद्रोही निराला ने शूद्र समाज को लेकर जो कुछ लिखा है वह इस 'सहानुभूति' की वास्तविकता सामने लाता है। माधुरी में छपे उनके लेख 'वर्णाश्रम धर्म की वर्तमान स्थिति' शूद्रों के प्रति उनके विचार उनकी सारी सहानुभूति का अतिक्रमण करके उन्हें एक कठोर जातिवादी और ब्राह्मण-पक्षधर सिद्ध करते हैं—''यहाँ के समाज-शासकों ने जो कठोर से कठोर नियम शूद्रों के लिए बनाये हैं उसका कारण यह नहीं कि वे निर्दयी थे...तत्कालीन एक ब्राह्मण का उत्कर्ष और एक शूद्र का बराबर नहीं हो सकता। अतएव दोनों के दण्ड भी बराबर नहीं हो सकते। लघु दण्ड से शूद्रों की बुद्धि भी ठिकाने न आती। दूसरे शूद्रों से जरा से उपकार पर सहस्र-सहस्र अपकार होते थे। उनके दूषित बीजाणु तत्कालीन समाज के मंगलमय शरीर को अस्वस्थ करते थे।''

जाहिर है कि निराला ने यह बात उन लोगों के जवाब में कही है जो इस बात की आलोचना कर रहे थे कि हिन्दू धर्मशास्त्रों में दलितों के विरुद्ध अमानुषिक विधान है।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

भारतीय इतिहास-गंगा के गोमुख—वेदव्यास

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाश्चात्यों की दृष्टि में गौतम बुद्ध एवं महावीर चाहे जितने महान् एवं प्राचीन इतिहास-पुरुष हों, परन्तु भारतीय इतिहास की आयु जानने के लिये हम भारतीय उन्हें 'अन्तिम अथवा एकमात्र' साधन नहीं मान सकते। हमारे लिये तो वे कल पैदा होने वाले इतिहास-शिशु मात्र हैं। गौतम एवं महावीर से पूर्व भी हमारा लाखों वर्ष का प्राचीन जीवन्त इतिहास है, जो अज्ञान के अन्धकार में तिरोहित है। या तो उसे जानने का हमारे पास कोई स्रोत नहीं है या फिर जानने के बाद भी, उसमें हमारी आस्था नहीं है। हमारी सोच ही पाश्चात्य सोच की गुलाम है। हम सोचते हैं कि जब ग्रीक हिस्ट्री पाँचवी छठी ई०पू० से पीछे नहीं जाती, जब बाइबिल वर्तमान सृष्टि को आठ हजार वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं मानती, जब मय, असुर, बेबिलोन, हित्ती, मितानी तथा मिस्र की संस्कृतियाँ ई०पू० छठी सहस्राब्दी से अधिक प्राचीन नहीं सिद्ध होतीं—तो फिर किस मुँह से हम भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को लाखों वर्ष पूर्व का बतायें?

हमको वेदमंत्रों का यह रहस्यगर्भ मंत्र न समझ में आया, और न ही आयेगा—**यथापूर्वमकल्पयत्।** अर्थात् विराट् पुरुष (परमेश्वर) ने नई सृष्टि वैसी ही रची जैसी पहले वाली थी। इस मंत्रांश से डार्विन का विकासवादी मत ध्वस्त हो जाता है कि मनुष्य वानरों से विकसित होकर आज की सभ्य स्थिति तक पहुँचा है। यह मंत्र इस तथ्य का भी साधक है कि सृष्टि परमेश्वर की ही तरह अनादि एवं अनन्त है। खण्डप्रलय एवं महाप्रलय आदि उसके औपचारिक धर्ममात्र हैं। सृष्टि के विकास में पाषाणयुग, लौहयुग, ताम्रयुग एवं स्वर्णयुग जैसी कल्पनायें भी हास्यास्पद हैं। क्योंकि फिर हमें स्वर्ण के बाद ढेर सारे युगों की गोटी बैठानी पड़ेगी।

वस्तुतः काल की विभुता के प्रति पाश्चात्य जन आश्वस्त हो ही नहीं सकते। क्योंकि वे काल को एक निश्चित बिन्दु से अग्रसर हुई रेखा मानते हैं। रेखा कभी पीछे नहीं लौटती। परन्तु भारतीय काल की अवधारणा वृत्तात्मक है—

गोल है दुनियाँ की माफिक परिधि जीवन-मृत्यु की
हैं चले जिस बिन्दु से हम, फिर वहीं आ जायेंगे!!

यही काल का विभुत्व है कि न वह किसी बिन्दु से प्रारम्भ होता है, न ही समाप्त! वह शाश्वत है, चिरन्तन है, नित्य गतिशील है और अपनी परिधि में घूमता, अपने ही बीते इतिहास को दुहराता रहता है।

काल की इस वृत्तात्मक अवधारणा ने ही भारतीय दर्शन में स्थापित 'पुनर्जन्मवाद' को भी ठोस आधार दिया है। यह मान लेना कितना सहज एवं विश्वसनीय प्रतीत होता है कि जीव (आत्मा) पुराने जीर्ण-शीर्ण शरीर को छोड़ नया शरीर धारण करता रहता है। अतएव,

न जायते म्रियते वा कदांचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

यदि हम पुनर्जन्म-सिद्धान्त न मानें तो ये जटिल प्रश्न उठेंगे कि क्या ईश्वर के पास पैदा होने वाले जीवों का कोई संग्रहालय है? यदि हाँ, तो उसमें जीवों की संख्या कितनी है? यदि जन्म का कारण जीव का कर्म-भोग नहीं (जिनके कारण वह सुख-दुख भोगता है) **ईश्वर** है तो फिर सुखी लोगों का ईश्वर दयालु-उदार-वदान्य तथा दीन-दुखियों का ईश्वर नृशंस-कृपण एवं शुष्क मान्य होगा।

वस्तुतः अपने बारे में, अपने राष्ट्र, अपने धर्म एवं अपनी संस्कृति के बारे में सोचते समय हम भयभीत रहते हैं, हीनग्रन्थियों से ग्रस्त रहते हैं। हमें भय होता है ए० स्टीन तथा पार्जिटर जैसे अनार्जवशील ऐतिह्यविदों का। हमें भय होता है नीरद चौधरी, रोमिला थापर एवं अरुन्धती राय जैसे अज्ञानगर्वित अभिशप्त भारतीय लेखकों का! यदि प्रमाणपुष्ट तथ्य भी हमें ज्ञात हों तो हम खुल कर नहीं कह सकते। इतिहास-लेखन के क्षेत्र में हमारी स्थिति, कठोपनिषद् के इस दृष्टान्त से पूर्णतः मेल खाती है—**अन्धेनेव नीयमानाः यथाऽन्धाः।** अर्थात् अन्धों के द्वारा उँगली पकड़ कर ले जाये जाते अन्धे!

भारत के इतिहास पर 'चौधराना' जताने वाले पाश्चात्य इतिहासकारों को मैं 'अन्धा' ही मानता हूँ। आँख से नहीं तो विवेक से अन्धा। क्योंकि वे पुराणों में प्रतिष्ठित भारतीय तथा विश्व इतिहास को देख ही नहीं पाये। उसे गल्प मान लिया। उसे काल्पनिक मान लिया। उसे 'अप्रामाणिक' सिद्ध कर दिया गया। उन्हें टुटपुजही 'ट्रॉय' की लड़ाई पर तो असीम श्रद्धा थी, परन्तु अठारह अक्षौहिणी सेना के विनाशस्थल 'कुरुक्षेत्र-धर्मयुद्ध' पर नहीं। इस युद्ध के प्रत्यक्षदर्शी, उसके वर्णयिता त्रिकालदर्शी भगवान् कृष्णद्वैपायन व्यास पर भी उनका विश्वास नहीं के बराबर था।

भगवान् वेदव्यास भारतीय इतिहास के प्रथम शलाकापुरुष हैं। उनसे प्रारम्भ होने वाला भारत का अविच्छिन्न इतिहास प्रायः प्रत्यक्ष-प्रमाण पर आधारित है। परन्तु पाश्चात्यों ने वेदव्यास को झुठलाकर गौतमबुद्ध को ही प्रथम इतिहास-पुरुष माना। इस दुरभिसन्धि के कारण ही, भारतीय प्रामाणिक इतिहास की प्राचीनता कम से कम ढाई हजार वर्ष कम हो गई।

वस्तुतः वाल्मीकि एवं व्यास—भारत के ऐसे कालजयी इतिहास-पुरुष हैं जिन्होंने स्वयुगीन नायकों पर अपने महान् ग्रन्थ लिखे। राम और रावण वाल्मीकि के समक्ष विद्यमान थे। कौरव तथा पाण्डव भी वेदव्यास के समक्ष विद्यमान ही नहीं थे, प्रत्युत उन्हीं की सन्तति भी थे। महर्षि व्यास योगज-प्रत्यक्ष के धनी, त्रिकालदर्शी कवि थे जिन्होंने अठारह दिनों के महाभारत-संग्राम का विलक्षण विश्वसनीय वर्णन किया। किस दिन किस-किस महारथी में भिड़न्त हुई? किस दिन कौन योद्धा मारा गया? युद्ध की कौन-कौन घटनायें कब-कब घटीं? इनका डायरीनुमा वर्णन महाभारत में सुरक्षित है। क्या विश्व के किसी भी अन्य इतिहासकार में यह सामर्थ्य दीखता है? परन्तु पाश्चात्यों की जूती ढोने वाले भारतीयों को इसका गर्व क्यों हो?

आर्थर मैकडानेल जैसा धीर-गम्भीर लेखक भी भगवान वेदव्यास का उपहासात्मक उल्लेख करता है—He was only a reteller of tales अर्थात् वह पुरानी कथाओं का पुनर्वक्ता (श्रावक) मात्र था। एक अन्य स्थान पर वह पुनः अभद्र टिप्पणी करता है—He was a legendary personality अर्थात् वह एक किंवदन्ती-पात्र (अप्रामाणिक, अनैतिहासिक) था। इन वाक्यों से स्पष्ट है कि आर्थर मैकडानेल भगवान् व्यास को इतिहास-पुरुष नहीं मानता था। उसकी दृष्टि में व्यास का अर्थ है—कथाश्रावक, किस्सागो!

कितना आश्चर्य है कि वेद की एकीभूत जटिल ज्ञानराशि को, मानव-हित के लिये, ऋक्-यजुस्-सामन् मंत्रों के आधार पर, त्रयी के रूप में व्यवस्थित करने वाले, अठारह महापुराणों तथा पञ्चमवेद महाभारत के रचनाकार तथा अन्ततः श्रीमद्भागवत-सरीखा कालजयी भक्तिग्रन्थ प्रणीत करने वाले एक अप्रतिम, महामहिम इतिहास पुरुष को एक अनधिकृत, अपात्र व्यक्ति 'लिजेण्डरी' बता रहा है? और हम हैं कि सात-आठ दशकों से वही भ्रान्तियाँ अपने छात्रों को पढ़ा रहे हैं, उसका खण्डन नहीं कर रहे हैं?

अब आप कृष्णद्वैपायन भगवान् वेदव्यास की ऐतिहासिकता पर विचार करें। प्रत्येक रचनाकार के ऐतिहासिक अस्तित्व के प्रत्यक्ष-साधक होते हैं उसके ग्रन्थ। जैसे महर्षि पतञ्जलि का साधक महाभाष्य, कालिदास का साधक अभिज्ञान-शाकुन्तल, प्लेटो का साधक दि कैपिटल, मिल्टन का साधक दि पैराडाइज लॉस्ट—ठीक उसी प्रकार वेदव्यास के अस्तित्व का साधक है महाभारत, श्रीमद्भागवत तथा पुराणग्रन्थ। हम इस तथ्य का अपलाप कैसे कर सकते हैं कि व्यास महाभारत के

रचनाकार हैं, जब कि हम इतना तक जानते हैं कि,

त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थामी कृष्णद्वैपायनो मुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्तमम्॥

वेदव्यास की ऐतिहासिकता का सबसे बड़ा प्रमाण था **कलिसंवत्** जिसे अंग्रेजों ने बड़ी चालाकी से अमान्य सिद्ध कर दिया। कलिसंवत् न केवल भारतवर्ष, प्रत्युत समूचे विश्व का प्राचीनतम प्रामाणिक संवत् है। भारत में यह कितना सर्वमान्य एवं व्यापक था इसका प्रमाण यही है कि धुर उत्तर कश्मीर में जनमे आनन्दवर्धन (नवीं शती ई०) अभिनव (11वीं शती) तथा कल्हण (13वीं शती) आदि से लेकर दाक्षिणात्य अप्पय एवं नीलकण्ठ दीक्षित तक (17वीं 18वीं शती) सारे आचार्य एवं कवि ग्रन्थरचना का समय कलिसंवत् में बताते हैं। महान् इतिहासकार कल्हण भी कर्कोटकवंशी गोनन्द से लेकर सुस्सल जयसिंह (1248 ई०) के युग तक का प्रायः दो ढाई हजार वर्षों का काश्मीरेतिहास मात्र कलिसंवत् के आधार पर लिखता है। वस्तुतः भारत में कलिसंवत् मालव, विक्रम तथा शकसंवत् से भी कहीं अधिक महनीय रहा है। कलिसंवत् भारतीय इतिहास की प्राचीनता का अकाट्य प्रमाण है। परन्तु अंग्रेजों ने उसका भूले-भटके भी उल्लेख नहीं किया और हमारे ऊपर ईसवी सन् को लाद दिया। तराजू पर तौल तो होती रही भारतीय इतिहास की, परन्तु तौल का बटखरा बन गया ईसवी सन्! ऐसा क्यों? ईसा मसीह से भारतीय इतिहास को क्या लेना-देना है? हम कालिदास का समय ईसा से आगे-पीछे क्यों बतायें? विक्रम से आगे या पीछे क्यों न बतायें? कलिसंवत् से उनका समय क्यों न निश्चित करें? कलि तथा विक्रम-संवत् तो हमारे अपने ही बटखरे हैं, इतिहास तौलने के साधन हैं!

कलिसंवत् की प्रारम्भ तिथि क्या है? कृपया ध्यान दें। महाभारत युद्ध की समाप्ति के अनन्तर युधिष्ठिर ने छत्तीस वर्ष तक शासन किया। छत्तीसवें वर्ष के शासनकाल में, जब उन्हें द्वारका से लौटे अर्जुन से ज्ञात हुआ कि योगेश्वर कृष्ण ने धराधाम छोड़ दिया है तो वह भी पौत्र परीक्षित को शासन सौंप, भाइयों एवं राजमहिषी द्रौपदी के साथ स्वर्गारोहणार्थ हिमालय की ओर चल पड़े। पीरक्षित के राज्यारोहण की तिथि से ही कलिसंवत् प्रारम्भ होता है। चूँकि इसी तिथि से (द्वापर युग का अवसान तथा) कलियुग का प्रादुर्भाव हुआ, अतएव इसे कलिसंवत् कहा जाता है। वस्तुतः महाराज परीक्षित ने इसे अपने पितामह धर्मराज युधिष्ठिर के नाम पर (युधिष्ठिर-संवत्) प्रवर्तित किया था। इस प्रकार कलिसंवत् भारतीय इतिहास की तीन प्रमुख घटनाओं का परिचायक है—

1. कलियुग का प्रारम्भ एवं कृष्ण का तिरोधान
2. परीक्षित का राज्यारोहण तथा
3. पाण्डवों का हिमालय-प्रस्थान।

सम्प्रति कलिसंवत् 5112 चल रहा है। चूँकि कलिसंवत् ही भगवान् कृष्ण की मृत्युतिथि भी है जो कि एक सौ पचीस वर्ष की पूर्णायु भोग कर दिवंगत हुए थे, अतएव 5112 में 125 वर्ष और जोड़ देने से हमें कृष्ण की जन्मतिथि प्राप्त हो जाती है। इसे कृष्णसंवत् कहा जाता है। पिछले 4 अप्रैल 2011 ई० (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वि०सं० 2068) से श्रीकृष्णसंवत् 5237 का प्रारम्भ हुआ है। श्रीमद्भागवत का प्रमाण है—

यदा मुकुन्दो भगवानिमां महीं
जहौ स्वतन्वा श्रवणीयसत्कथः।
तदाहरेवाप्रतिबुद्धचेतसा-
मधर्महेतुः कलिरन्ववर्तत॥ 1.15.36॥

कलिसंवत् के प्रारम्भ से छत्तीस वर्ष पूर्व महाभारत-युद्ध होने का अर्थ स्पष्ट है कि यह महासमर आज से (5112 + 36 =) 5148 वर्ष पूर्व हुआ था। महाभारत-युद्ध के समय पितामह भीष्म की अवस्था 158 वर्ष होने का अर्थ है कि वह (5148 + 158 =) 5306 में उत्पन्न हुए। पितामह भीष्म जब अठारह-बीस वर्ष के कुमार देवव्रत थे तभी दाशकन्या सत्यवती (जो महर्षि व्यास की जननी है) का विवाह उनके पिता शान्तनु से सम्पन्न हुआ था। ऐसी स्थिति में, माता सत्यवती भीष्म से संभवतः पन्द्रह-बीस वर्ष से अधिक बड़ी न रही होंगीं और सत्यवती की कन्यावस्था (षोडशील से पूर्व) में उत्पन्न व्यास भी, भीष्म से दस-पाँच वर्ष ही बड़े रहे होंगे। इस प्रकार, हम कलिसंवत् के ठोस प्रमाण से भीष्म एवं व्यास को समवयस्क एवं समसामयिक मान सकते हैं। विचित्रवीर्य की मृत्यु के अनन्तर माता सत्यवती सर्वप्रथम भीष्म को और (उनके अस्वीकार कर देने पर) व्यास को आमन्त्रित करती हैं नियोगविधि से सन्तानोत्पादन-हेतु—अपनी अनुजवधुओं से। इस तथ्य से भी व्यास एवं भीष्म की समवयस्कता सिद्ध होती है।

व्यास, भीष्म एवं कृष्ण महाभारत-कथा में अनेक अवसरों पर एकत्र दीखते हैं। द्रौपदी-विवाह के अवसर पर कृष्ण एवं व्यास एकत्र हैं तो युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में कृष्ण, व्यास एवं भीष्म—तीनों। फलतः इन तीनों ही इतिहास-पुरुषों को समसामयिक महाभारतकालीन पात्र मानना उचित होगा।

जिस सरलता, अश्रद्धा एवं अज्ञान के साथ आर्थर मैकडानेल ने भगवान् व्यास को काल्पनिक (अप्रामाणिक) मान लिया वह सर्वथा उपहासास्पद है। काश, उन्होंने वेदव्यास को गहराई से जानने का यत्न किया होता!

भगवान् वेदव्यास भारतीय इतिहास के मानदण्ड हैं। वह आर्थर मैकडानेल तथा उन्हीं जैसी सतही बुद्धि वाले, पूर्वाग्रहग्रस्तों को भले ही प्रामाणिक न प्रतीत हों परन्तु पारसी धर्म का प्रवर्तक जरथुष्ट्र (ई०पू० 1000 ई०) उन्हें भलीभाँति जानता-पहचानता है। अरब देश के प्राचीनतम् शायर, जो पैगम्बर मुहम्मद साहब से भी प्रायः सत्रह सौ वर्ष पूर्व पैदा हुए, भी भगवान् व्यास के ज्ञाता एवं प्रशंसक हैं। कृपया अगले प्रमाणों पर ध्यान दें।

फारसी में स का ह हो जाता है। अतः प्राचीन काल में ही वे लोग वैदिक सप्तसिन्धु को हप्तहिन्दु अथवा मात्र हिन्दु नाम से व्यवहृत करने लगे थे। पारसियों के धर्मग्रन्थ जेन्दावेस्ता के **वेदिदाद** नामक भाग में हिन्दुकन् शब्द के अनेकशः प्रयोग मिलते हैं। अवेस्ता के एक मंत्र (1.19) में परमेश्वर कहता है—मैंने जो 15वाँ देश बनाया है वह विश्व का सर्वोत्तम देश हप्तहिन्दुकन् है। अवेस्ता के ही सम्राट् गुस्ताष्वम एवं जरथुष्ट्र-संवाद में यह सन्दर्भ भी आया है कि हिन्ददेश से व्यास नामक एक ज्ञानी ब्राह्मण फारस आया था—

अकून् विरहमने व्यास नाम आज हिन्द
आमल दस दाना कि अकल चुना मस्त।

पारसियों के **'मेहेरयास्त'** नामक ग्रन्थ में हिन्द देश को ईरान से पूर्व में बताया गया है तो **'शातीर'** नामक तीसरे ग्रन्थ में हिन्दु देश के निवासियों को 'हिन्दी' बताया गया है।

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी ई०पू० 484 वर्ष के ईरानी सम्राट् दाय के शुषा-स्थित शिलालेख का एक प्रमाण उद्धृत किया है जिससे भारत एवं ईरान के गहन-सम्बन्धों का बोध होता है—

पिश्तपुह्या इदाकने ह्यावुषु आ
उलाह्या हिन्दुहनु इनह्या हरनु वमिया अयहियु।

अर्थात् इस राजप्रासाद के लिये कलाकौशल-मण्डित हाथी के दाँत हिन्दुदेश से, सरस्वती नदी के रास्ते मँगाये गये थे!

इस्लाम की स्थापना से पूर्व अरब में भी वैदिक धर्म का ही वर्चस्व था। काबास्थित शिवमन्दिर में अरब कवियों के सम्मेलन होते थे। कुछ श्रेष्ठ कवियों के काव्य सुवर्णपत्रों पर अंकित कर काबा के शिवालय में सुरक्षित भी रखे गये थे। हजरत मुहम्मद ने विजय के उन्माद में वह सारा ग्रन्थागार अग्निसात् करा दिया। परन्तु बड़े-बूढ़ों की प्रार्थना पर सुवर्णपत्रांकित कविताएँ उन्हें लौटा दीं।

कालान्तर में खलीफा हारून-अल्-रशीद ने पैगम्बर मुहम्मद के पूर्ववर्ती अरब-कवियों की कविताओं का एक संग्रह-ग्रन्थ स्वयं तैयार किया जिसमें महादेव विक्रमादित्य आदि के उल्लेख एवं प्रशस्तियाँ हैं। इसी संग्रह में मुहम्मद से प्रायः 1700 वर्ष पूर्व उत्पन्न **लबि-बिन-अरवतफ-बिन-तुर्फा** नामक शायर की एक कविता है—

अया मुबारकेल अरज यू शैये नोहा मिलन हिन्दे व अरादकल्लाहः मज्यो नज्जेल जिकरतुन॥1॥
बहल तजल्लीयतुन एनाने सहवी अरवअतुन जिकरा बहाजे ही योनज्जेलुर्रसूल मिलन हिन्दतुन॥2॥
यक्लुनल्लाहः या अहलल अरज अलमीन कुल्लहुम फत्तबेऊ जिकरतुल *वेद* हक्कुन मालम योबज्जेलतुन॥

न होवा आलमु *स्साम* बल *यजुर्* मेनल्लाहे तनजीलन कएनोमा या अरवीयो मुत्तबेअन यो वश्शेरी यो नजातुन॥ व इसनैनं हुमा *रिक अतर* तासिहीन कः अरवबतुन व असनात अला ऊदन बहावा मशएरतुन॥

अर्थात् हे हिन्दुओं की पुण्यभूमि! तू धन्य है। ईश्वर ने ज्ञानप्रसार के लिये तुझे चुना है। ईश्वर का यह ज्ञानप्रकाश चार प्रकाशमान स्तम्भों की तरह समूचे जगत् को प्रकाशित करता है। वह ज्ञानप्रकाश हिन्दू महर्षियों के माध्यम से चार रूपों में प्रकट हुआ है। जिसे वेद कहते हैं। ईश्वर कहता है कि मेरे ज्ञान का नाम वेद है। उसी के अनुसार तुम आचरण करो। यह ज्ञान-भण्डार साम और यजुर् इन दो वेदों में निहित है। इन्हीं में मोक्ष का मार्ग उपदिष्ट है। इसी प्रकार ऋक् एवं अथर्व ये दो वेद बन्धुत्व की शिक्षा देते हैं। जो इन वेदों के प्रकाश में आया, वह कभी अन्धकार-ग्रस्त नहीं होगा।

सम्प्रति हिजरी सन् 1432 चल रहा है। यदि उपर्युक्त शायर पैगम्बर से सत्रह सौ वर्ष पहले का है तो सिद्ध है कि वेद प्रशस्तिपरक यह कविता आज से (1432 + 1700 =) 3132 वर्ष प्राचीन है। यदि तुर्फा नामक यह शायर चारों वेदों से परिचित है तो निश्चय ही वह भगवान् वेद-व्यास से भी परिचित रहा होगा। क्योंकि एकीभूत वेद का व्यास (विभाजन) उन्होंने ही किया। स्वयं हजरत मुहम्मद के चाचा उमर-बिन-हश्शाम एक ख्यातनामा शायर हैं। उन्होंने भी हिन्द-सम्बन्धी अपनी लम्बी कविता में महादेव की उपासना के गुण गाये हैं तथा आर्तभाव से यह इच्छा व्यक्त की है कि हे परमेश्वर! मेरी सारी जिन्दगी ले लो परन्तु मुझे बस एक दिन का भारत-निवास दे दो! क्योंकि वहीं मनुष्य जीवन्मुक्त हो पाता है!

ब अहलोलहा अजह अरमीमन महादेव ओ
मनजिल इलमुद्दीने मिनहम बसयत्तरू॥
न सहवी केयाम फी मकामिल हिन्दे यौमन
व यकूलन लातहजन फ इन्नक तबज्जरू॥

इन अरबी-फारसी प्रमाणों के लिये मैं विद्वान् मित्र श्रीजयरामाचार्य (बँगलौर) का परम आभारी हूँ। काश, आर्थर मैकडानेल भी इन अमूल्य विवरणों से परिचित होते तो भगवान् व्यास को किस्सागो या किंवदन्ती बताने का दुस्साहस न कर पाते।

भारतीय इतिहासकारों में आज एक फैशन चल पड़ा है Before Buddha, After Buddha कहने का। बुद्ध से पूर्व उन्हें कुछ नहीं मिलता— सिवाय अपने अज्ञान के। मेरी प्रार्थना है कि वे अपनी यह मूढ़ता बरकरार रखें, उसमें थोड़ा संशोधन करके—Before Vedavyasa, After Vedavyasa के रूप में। यदि वेदव्यास से पूर्व का भारतीय इतिहास हमारे ऐतिह्यविदों को नहीं मिलता तो मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं। क्योंकि उनके हिन्दुस्तानी चोले में दिमाग यूरोप का है। मुझे तो लाखों वर्ष पुराना भारत का इतिहास वेद-पुराण-दर्पण में प्रतिबिम्बित सुस्पष्ट दीख रहा है।[1]

अत्र-तत्र-सर्वत्र

प्रो० बिंद्रा प्रसाद मिश्र सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के वीसी

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय समेत उत्तर प्रदेश के तीन विश्वविद्यालयों में नये कुलपति नियुक्त किए गए हैं। राज्यपाल व कुलाधिपति बीएल जोशी ने लखनऊ विवि में संस्कृत विभाग के प्राचार्य प्रो० बिंद्रा प्रसाद मिश्र को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी का कुलपति नियुक्त किया है। दिल्ली विवि के रसायनशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो० एके बक्शी को उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विवि इलाहाबाद व राजस्थान विवि जयपुर के प्राणिविज्ञान विभाग के प्रो० अशोक कुमार को छत्रपति शाहूजी महाराज विवि कानपुर का कुलपति बनाया गया है। सभी का कार्यकाल कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष के लिए होगा। प्रो० बिंद्रा प्रसाद मिश्र ने कई पुस्तकें लिखी हैं। उनके कई शोधपत्र राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी सहित अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

हिन्दी किताबों से होगी रमज़ान में इबादत

रमज़ान नज़दीक है। कहते हैं कि रमज़ान अल्लाह का महीना है। खुदा ने पाक किताबों में बंदों से कहा है कि भले ही तुम ग्यारह महीना अपने तरीके से गुज़ारो मगर एक महीना मुकद्दस रमज़ान का मेरे लिए वक्फ करा दो, इसलिए अल्लाह के जो नेक बन्दे हैं वो इस महीने में अल्लाह रब्बुल इज़्जत के बताये हुए रास्तों और नबी की सुन्नतों पर चलकर 30 रोज़ा रखते हैं और इबादत करते हैं। बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो उर्दू, अरबी और फारसी नहीं पढ़ पाये हैं। ऐसे लोगों के लिए अब इल्मे दीन की किताबें, मसलन कुरान, हदीस, कानूने शरीयत वगैरह का हिन्दी रूपान्तर और अनुवाद भी आ गया है।

हिन्दी रूपान्तर आ जाने से वो मज़हबी के नज़दीक तो आये ही साथ ही उन्होंने इल्मे दीन भी सीखा।

ब्रिटिश सांसदों ने की बीबीसी सेवा बहाल करने की माँग

ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन (बीबीसी) की भारत में हिन्दी रेडियो सेवा बन्द किए जाने के फैसले पर फिर से विचार करना चाहिए। विगत दिनों ब्रिटिश संसद के विदेश मामलों की समिति के सदस्यों ने ये बात कही। समिति ने कहा, "हिन्दी सेवा समाप्त किए जाने की बात पर ध्यान देने की जरूरत है। भारत आर्थिक क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है, ब्रिटिश सरकार ने भी भारत के साथ द्विपक्षीय सम्बन्ध को सुधारने की इच्छा जाहिर की है।" उल्लेखनीय है कि 26 जनवरी को बीबीसी वर्ल्ड सर्विस ने मार्च से बीबीसी हिन्दी सेवा समाप्त करने की घोषणा की थी। यह घोषणा प्रधानमन्त्री डेविड कैमरून की बजट घाटे में कटौती की योजना के अन्तर्गत की गई थी। हालांकि चौतरफा आलोचना के कारण बीबीसी द्वारा योजना में बदलाव करते हुए करंट अफेयर पर आधारित एक घण्टे के कार्यक्रम को एक साल के लिए अस्थायी रूप से चलाए जाने की घोषणा की गई।

बन्द हुआ ब्रिटेन का प्रमुख साप्ताहिक अखबार

ब्रिटेन का सर्वाधिक बिकने वाला साप्ताहिक अखबार 'न्यूज ऑफ द वर्ल्ड' बन्द हो गया। अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया व्यवसायी रूपर्ट मर्डोक के स्वामित्व वाली कम्पनी न्यूज इंटरनेशनल ने 'हैकिंग प्रकरण' में अखबार का नाम आने के बाद इसे बन्द करने की घोषणा की। इसका आखिरी संस्करण रविवार को प्रकाशित हुआ। 168 साल पुराने अखबार पर वैज्ञानिकों, खूंखार अपराधियों और इराक युद्ध में मारे गये सैनिकों के परिजनों के फोन हैक करके सूचनाएँ जुटाने के गम्भीर आरोप लगे हैं। खबर तो यह भी है कि अखबार ने 2007 में लन्दन में हुए सीरियल बम विस्फोट के पीड़ितों, अफगानिस्तान में तैनात ब्रिटिश सैनिकों के फोन की बातचीत को भी इस्तेमाल किया। कम्पनी ने माना है कि यह अमानवीय कृत्य था और उसके यहाँ इस तरह की गतिविधियों की कोई जगह नहीं है।

मीडिया मुगल के नाम से प्रसिद्ध रूपर्ट मर्डोक ने वर्ष 1969 में इस इखबार का अधिग्रहण किया था। हालाँकि शुरू के कुछ वर्षों में यह अखबार कुछ खास नहीं कर सका था, लेकिन पिछले डेढ़-दो दशक से यह काफी लोकप्रिय हो गया था। इसने रविवार को प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक अखबारों में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया था। मगर सनसनीखेज और सबसे अलग समाचार प्रकाशित करने के चक्कर में इसने फोन हैकिंग जैसी अनैतिक और गैर कानूनी गतिविधियों को अंजाम दिया। इसका नतीजा सामने है।

अखबार के करीब दो सौ पत्रकारों के समक्ष बेरोजगारी की स्थिति आ खड़ी हुई है। एक पत्रकार ने कहा कि फोन हैकिंग के लिए पत्रकार जिम्मेदार नहीं है, बल्कि इसके लिए असली दोषी तो रेबेका ब्रूक्स हैं। रेबेका अखबार की मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं।

सैकड़ों भाषाएँ खत्म होने की कगार पर (भारत शीर्ष पर)

दुनियाभर में अंग्रेजी के वर्चस्व और संरक्षण के अभाव में सैकड़ों भाषाएँ समाप्ति के कगार पर हैं और ऐसे देशों की सूची में भारत में स्थिति सर्वाधिक चिंताजनक है जहाँ 196 भाषाएँ लुप्त होने

को हैं। संयुक्त राष्ट्र के आँकड़ों के अनुसार दुनियाभर में ऐसी सैकड़ों भाषाएँ हैं जो विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच गई हैं और भारत के बाद दूसरे नम्बर पर अमेरिका में स्थिति काफी चिन्ताजनक है जहाँ ऐसी 192 भाषाएँ दम तोड़ती नजर आ रही हैं। विश्व इकाई द्वारा जारी की गयी एक रिपोर्ट के अनुसार, भाषाएँ आधुनिकीकरण के दौर में प्रजातियों की तरह विलुप्त होती जा रही हैं।

एक अनुमान के अनुसार, दुनियाभर में 6900 भाषाएँ बोली जाती हैं लेकिन इनमें से 2500 भाषाओं को चिंताजनक स्थितिवाली भाषाओं की सूची में रखा गया है। रिपोर्ट कहती है कि ये 2500 भाषाएँ ऐसी हैं जो पूरी तरह समाप्त हो जाएँगी। अगर संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2001 में किए गए अध्ययन से इसकी तुलना की जाए तो पिछले एक दशक में बदलाव काफी तेजी से हुआ है। उस समय विलुप्तप्राय भाषाओं की संख्या मात्र 900 थी लेकिन यह गम्भीर चिंता का विषय है कि तमाम देशों में इस ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। भारत, अमेरिका के बाद इस सूची में इंडोनेशिया का नाम आता है जहाँ 147 भाषाओं का आनेवाले दिनों में कोई नामलेवा नहीं रहेगा। संयुक्त राष्ट्र ने ये आँकड़े 21 फरवरी, 2009 को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की पूर्व संध्या पर जारी किए थे।

'रस की गंगा' मुफ्त

वरिष्ठ सम्पादक सत्यनारायण मिश्र की देखरेख और 'जीवन प्रभात विमला पुस्तकालय' के तत्त्वावधान में एक अत्यन्त रोचक शृंखला प्रकाशित हो रही है। इसकी कई किश्तें छप चुकी हैं। जो साहित्यप्रेमी इन्हें पढ़ना चाहें, उन्हें पन्द्रह रुपये के डाक-टिकट भेजने पर सुप्रसिद्ध लेखक की एक पुस्तिका के साथ 'रस की गंगा' की प्रतियाँ मुफ्त प्राप्त हो सकती हैं। पता : जीवन प्रभात विमला पुस्तकालय, ए 209 साईं श्रद्धा, वीरा देसाई मार्ग, मुम्बई-58

दुर्लभ अक्षर होंगे संरक्षित

सुखद समाचार है कि भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय ने पाण्डुलिपियों और दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण की योजनाओं में बदलाव किया है।

योजना के अन्तर्गत दुर्लभ पाण्डुलियों और पुस्तकों को डिजिटल स्वरूप में पेश करने और इसमें भी दुर्लभ चित्र और पत्थर पर लिखाई से जुड़े विविध आयामों को शामिल किया गया है। इस योजना के अन्तर्गत एकमुश्त वित्तीय मदद की राशि को वर्तमान 10 लाख रुपए से बढ़ाकर 50 लाख रुपए कर दी गई है।

जगदीश किंजल्क केन्द्र प्रबन्धक बने

प्रसिद्ध साहित्यकार, चर्चित साहित्यिक पत्रिका 'दिव्यालोक' के सम्पादक एवं राष्ट्रीय ख्याति के अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारों के संयोजक श्री जगदीश किंजल्क, इग्नू द्वारा संचालित ज्ञानवाणी रेडियो (एफ०एम०) भोपाल के केन्द्र प्रबन्धक नियुक्त किये गये हैं।

अडिगा का नया उपन्यास

बुकर पुरस्कार से सम्मानित उपन्यासकार अरविन्द अडिगा के नवीनतम दूसरे उपन्यास 'लास्ट मैन इन टॉवर' में बताया गया है कि मुम्बई की हाउसिंग सोसाइटियों में रहने वाले लोग धन, बल और विलासिता के बावजूद कैसे अभाव-भरा जीवन व्यतीत करते हैं।

देश के हर कोने में बहेगी ज्ञान गंगा

देश के सभी प्रतिष्ठित शोध संस्थान, विश्वविद्यालय व पुस्तकालय अब नेशनल नॉलेज नेटवर्क पर उपलब्ध होंगे। अभी तक 252 संस्थान इस नेटवर्क में शामिल हो चुके हैं, लक्ष्य 1500 से अधिक को जोड़ने का है। इसका उद्देश्य ज्ञान अर्जन में लगे लोगों की एक ऐसी सोसायटी बनाना जिसकी कोई सीमा ही न हो। इसे आप कह सकते हैं कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसा क्रान्तिकारी कदम है जो देश के हर कोने में समान रूप से ज्ञान की गंगा बहाएगा। इसके इस्तेमाल से सभी शिक्षण संस्थानों के छात्रों को अपने ज्ञान को अपग्रेड करने का समान अवसर मिलेगा। सभी को नए अनुसंधानों की जानकारी मिल सकेगी।

इस नेशनल नॉलेज नेटवर्क से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ जुड़ गए हैं। इन संस्थानों को इंटरनेट की हाईस्पीड सेवा उपलब्ध कराई गई है।

नेटवर्क से जुड़ने के बाद किसी भी शिक्षण संस्थान का छात्र विषय विशेष पर जानकारी हासिल करने के लिए कुछ ही सेकेण्ड के भीतर ज्ञान का महाभण्डार पा सकेगा। यहाँ तक कि अपने मनपसन्द विषय व प्रोफेसर की क्लास भी बिना प्रवेश पाए अटेंड कर सकेगा। बनारस का छात्र चेन्नई, दिल्ली के शिक्षण संस्थानों के क्लास अटेंड करेगा। इस सुविधा से एक समय में कई संस्थान एक ही विषय पर रिसर्च कार्य भी कर सकेंगे। इसे वैश्विक स्तर पर उपलब्ध नेटवर्क से भी जोड़े जाने की योजना है।

ऑक्सफोर्डशायर स्थित जॉर्ज ऑरवेल का मकान बिक रहा

लंदन, प्रसिद्ध लेखक जॉर्ज ऑरवेल का ब्रिटेन के ऑक्सफोर्डशायर स्थित मकान बिकने जा रहा है। इसकी कीमत 11 लाख पाउण्ड (करीब आठ करोड़ रुपये) रखी गयी है। ऑरवेल का मूल नाम एरिक आर्थर ब्लेयर था। उनका जन्म 25 जून, 1903 को भारत में बिहार के मोतिहारी में हुआ था। 20वीं शताब्दी के अंग्रेजी साहित्य के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में शामिल ऑरवेल अपने उपन्यास 'नाइंटीन एट्टी फोर (1949)' और 'एनिमल फार्म (1945)' के लिए जाने जाते हैं।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का संयुक्तांक मई-जून 2011 अत्यन्त विचारोत्तेजक सम्पादकीय के साथ प्रकाशित हुआ है जिसमें मानवीय मूल्यों के क्षरण पर चिन्ता व्यक्त की गई है। हिन्दी की नई चाल, पुरइन-पात, हंस का आत्मकथा अंक के प्रकाशन के साथ-साथ सम्मान पुरस्कार एवं लोकार्पण की चर्चा की गई है। हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के साहित्यिक सांस्कृतिक समाचारों की यह पत्रिका पाठकीय स्पन्दन में सहभागिता करते हुए अपना उत्तरदायित्व निर्वहन कर रही है।

—**डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय,** अलीगढ़

'भारतीय वाङ्मय' का मई-जून (संयुक्तांक) 2011 प्राप्त हुआ।

अंक प्राप्त करते ही एक ही बैठक में सम्पूर्ण पढ़ डाला। अंक में समस्त उपयोगी सामग्री—सम्मान, पुरस्कार, संगोष्ठी, पुस्तक-समीक्षा, पुस्तक-लोकार्पण, आदि मन को आनन्दित कर गई। प्रो० कान्तिकुमार जैन का 'इधर हिन्दी नई चाल में ढल रही है' सुचिन्तित आलेख हिन्दी की वर्तमान अवस्था की पूर्ण अभिव्यक्ति कर रहा है। 'विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस कब क्यों और कैसे'—सम्पादकीय तथा जर्मन कवि एमानुएल गाईबल की प्रसिद्ध कविता 'वसंत की आशा' के विषय में ब्ल्यूखर स्कूल की पाँचवी कक्षा के चुलबुले, शरारती बच्चों का पत्र के समान ज्ञानवर्धक सामग्री 'भारतीय वाङ्मय' की शोभा हैं।

पूर्व के अंकों में भी पुस्तक समीक्षा, सम्पादकीय तथा प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र के गवेषणापूर्ण आलेख अत्यन्त ज्ञानवर्धक रहे हैं। इनके लिए विद्वान् लेखक अभिनन्दनीय हैं।

'भारतीय वाङ्मय' के आगमन की प्रतीक्षा रहती है। पत्रिका नित्य ही वृद्धिगत हो ऐसी कामना है। —**प्रो० कुसुम भूरिया दत्त,** सागर

हिन्दी जगत की सूचनाओं का भण्डार 'भारतीय वाङ्मय' है। बड़ी उपयोगी सामग्री आप एकत्र कर पाठकों तक पहुँचा रहे हैं। मेरी बधाई लें।

—**डॉ० सुधेश,** नई दिल्ली

मई-जून (संयुक्तांक) 2011 अंक हाथ में है। इतने कम पृष्ठों में इतनी अधिक उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करने वाली हिन्दी साहित्य-जगत् की सम्भवत: यह एकमात्र पत्रिका है। पत्रिका के हर पृष्ठ, हर स्तम्भ, हर कॉलम, हर समाचार पठनीय एवं उल्लेख्य होते हैं। यह मेरी एक ईमानदार टिप्पणी है कि मैं आपकी इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार किया करता हूँ।

इस अंक में प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र को न पढ़ पाना थोड़ा खला। अंक को आद्योपान्त सुन्दर व सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपको कोटिश: साधुवाद।

—**डॉ० चन्द्रशेखर तिवारी,** अनपरा, सोनभद्र

अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी

सम्पादन : पुरुषोत्तमदास मोदी

गणेशशंकरजी का स्मरण उस समर्पणमयी पत्रकारिता का स्मरण है जब पत्रकारिता व्यवसाय नहीं थी, एक मिशन, एक लक्ष्य थी। पत्रकार की कलम तलवार से भी कहीं अधिक तेज और गहरा प्रहार करती थी। सत्ता की सारी शक्ति उस प्रहार से तिलमिला उठती थी। हथकड़ियाँ, बेड़ियाँ और जेल—यही सत्ता की अभिव्यक्ति थी। आज देश को उस बलिदानी की याद करनी चाहिए जिसने साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए बलिदान दिया।

आकार डिमाई

पृष्ठ 328+16 पृ० चित्र

सजिल्द : 978-81-89498-49-8 • रु० 400.00
अजिल्द : 978-81-89498-50-4 • रु० 250.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

स्वनामधन्य गणेशशंकर विद्यार्थी

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

अरे, बाप रे। 'प्रताप' के सम्पादक स्वनामधन्य गणेशशंकर विद्यार्थी। यह इनके मित्र हैं। चलो, मैं भी देखूँ उस बहादुर को। मैं 'प्रताप' का भी ग्राहक था। लेख पढ़ा करता था। क्या ओज और क्या शैली। तबीयत फड़क उठती थी। आज उसी सम्पादक के दर्शन होंगे।

मैंने अपने मन में 'प्रताप' सम्पादक की एक तस्वीर बना रही थी। उनके लेख पढ़ कर वह तस्वीर बनाई थी। सोचा था—छः-साढ़े छः फुट का जवान होगा। विशाल साफा बाँधता होगा। हाथ में एक भारी लठ लिये रहता होगा। मूँछें महाराणा प्रताप की तरह ऐंठी हुई होंगी। जब वह चलता होगा, तब सी०आई०डी० लोग उसके पीछे-पीछे दुबकते चलते होंगे और जब वह घूम कर कभी-कभी 'हुश' कर देता होगा, तब सी० आई० डी० वालों में भगदड़ मच जाती होगी। जो इतनी सन्नाटे की बात लिख सकता है वह जरूर कोई लहीश-शहीम भीमकाय नरपुंगव होगा। नाम के आगे विद्यार्थी देख कर यह अनुमान कर लिया था कि गणेशशंकर वाकई में स्टूडेंट होगा और बी०ए० के बाद एम०ए० क्लास में पढ़ता होगा। यह थी मेरे मन में गणेशजी की तस्वीर। जब चतुर्वेदीजी के साथ कांग्रेस पंडाल तक पहुँचा और वहाँ जलपान के खेमे में एक निहायत दुबले-पतले चश्मा लगाये, किन्तु तेजस्वी नवयुवक को चतुर्वेदीजी के गले मिलते देखा तब मैं अचकचाया। क्या यही विद्यार्थीजी हैं? हे भगवान्! मेरी तस्वीर पुछ गयी। तन्दुरुस्त, तगड़े, अक्खड़, साढ़े 6 फुटे, बलिष्ठ नौजवान की कल्पना की थी। गणेशजी निकले निहायत ही मँझोले या ठिगने कद के दुबले-पतले युवक। खैर, यही कम सौभाग्य था कि गणेशजी के दर्शन हो गये। वहीं पर पास में एक बनिये साहब तशरीफ रखते थे। पीली पगिया बाँधे, भले से कपड़े पहने, एक छड़ी लिये, नेत्र में बुद्धि का तेज बटोरे अगर कोई ऐसा आदमी दिखे, जिसकी पाग कहै पंसारी है, पर जिसकी तेजस्विता कहे कि बाबू है, तो आप क्या करेंगे? सम्भवतः आप ज़रा गड़बड़ी में पड़ जायँगे। मैं जरा दूर खड़ा था। थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि चतुर्वेदीजी उस बनिया रूपधारी को प्रणाम कर रहे हैं। मैं कुछ समझ न पाया।

बाद में मालूम हुआ कि वह महानुभाव स्वनामधन्य श्रीमान बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त थे। चतुर्वेदीजी कह रहे थे, आज मुझे अपने गुरुवर के भी दर्शन हो गये, मैंने पूछा, ''आपके गुरु कौन?'' उन्होंने कहा, ''वही पाग बाँधे जो सज्जन थे, वह मेरे गुरु श्री मैथिलीशरणजी गुप्त हैं।'' जब मैंने यह सुना तब एक अकली गद्दा लगाया। मैं बोल उठा, ''अच्छा, अब पकड़ा है मैंने। आप तो बड़े छिपे रुस्तम मालूम पड़ते हैं। क्यों जनाब, आप ही 'एक भारतीय आत्मा' नाम से कविता लिखते हैं न? बोलिए?'' माखनलालजी का चेहरा फक। उन्होंने सोचा, अच्छा सी०आई०डी० साथ में लगी है। वह बोले, ''ऐं, नहीं तो। मैंने यह कब कहा?'' मैं बोला, ''अजी महाशय, रहने भी दीजिए, 'प्रभा' में 'एक भारतीय आत्मा' ने कई महीने पहले 'श्री मैथिलीशरण स्तवन' लिखा था। उसमें उन कविजी ने उन्हें गुरु के रूप में स्मरण किया था और आज आप कहते हैं कि गुप्तजी आपके गुरु हैं। तो फिर जनाब क्या मैं एक और एक को जोड़ कर दो भी नहीं बना सकता? सच मानिए पं० माखनलालजी चतुर्वेदी यह सुन कर ऐसे चकराये कि उनकी सिट्टी- पिट्टी गुम। मैंने इस बात पर खुश था कि आज मैं बड़ी भारी खोज की। पहली बात तो 'प्रभा' सम्पादक का पता पाया। दूसरी बात यह कि 'भारतीय आत्मा' का घूँघट हटाया। तीसरे यह कि विद्यार्थीजी के दर्शन हुए। चौथे यह कि श्री मैथिलीशरणजी गुप्त के भी दर्शन हुए।

खैर, सुबह हुई तो माखनलालजी गणेशजी के स्थान पर चलने की तैयारी करने लगे। मुझे भी साथ चलने को कहा। मैं साथ हो लिया। गणेशजी शायद गणेशगंज के एक मकान में ठहरे हुए थे। उनके साथ थे उनके मित्र पंडित शिवनारायण मिश्र और महाशय काशीनाथजी। माखनलालजी ऊपर वाली कोठरी में ठहरे और मैं एक नीचे की कोठरी में जम गया। गणेशजी ने पूछा तो माखनलालजी ने कह दिया कि एक विद्यार्थी है, आ गया है। अब यह फिक्र हुई कि कांग्रेस कैसे देखी जाए। मैं खूब भटका। कुछ लाभ न हुआ। टिकट मिलने बन्द हो गये थे। मैं बड़ा निराश हुआ। शाम को लौट कर आया। उदास था। गणेशजी ने पूछा, ''क्यों जनाब, कल कांग्रेस है, आपके पास टिकट है?'' मैंने कहा कि दिनभर दौड़ लगाई, सफलता न मिली। वह बोले, ''कोशिश कीजिए, जरा स्वावलम्बन सीखिए।'' सुन कर चुप हो गया। स्वावलम्बन की दुम में खट-खटा। दिन भर झक मारी, मारा मारा फिरा, कुछ लाभ न हुआ। और यह हजरत स्वावलम्बन का पाठ पढ़ा रहे हैं पर क्या कहता। दूसरे रोज छोटे लाट साहब कांग्रेस में आने वाले थे। बड़ी चहल-पहल थी। लोग पिले पड़े थे। मैंने फिर टिकट की कोशिश की, पर व्यर्थ। रात को लौट कर आया। एक दिन कांग्रेस हो गयी, अन्दर न जा पाया। पर शाम के वक्त पंडाल से निकल कर सबजेक्ट्स कमेटी जाते हुए लोकमान्य के दर्शन कर लिये। भीड़ ने उन्हें घेर लिया था। भीड़ चीरता हुआ, आँखों में आँसू भरे लोकमान्य के निकट पहुँचा और उनके चरण स्पर्श किये। मैंने अपने को धन्य माना। लोकमान्य ने सिर पर हाथ रखा, आँखों में आँसू देख कर एक-दो बार सिर थपथपा दिया। लोकमान्य को देखने और उनकी पुनीत चरण-रज को सिर पर रखने का जीवन में वह प्रथम अवसर था। मैं प्रेम-भक्ति विह्वल था। इतना खुश हुआ मानों एक निधि मिल गयी हो। डेरे पर लौटा तो गणेशजी ने फिर वही सवाल किया कि ''टिकट मिला? तुमने क्या कोशिश की?''

मैंने सहज स्वभाव कहा, ''मैंने कांग्रेस देख ली। टिकट-विकट तो नहीं मिला, पर आज लोकमान्य के चरण स्पर्श कर लिये। अब मुझे कांग्रेस देखने को भी न मिले, तो कोई चिन्ता नहीं। पर गणेशजी कब पिंड छोड़ने वाले थे। बोले, ''जनाब, यह बताइए कि आपने टिकट पाने के लिए क्या किया।'' मैंने कहा कि मैं स्वयंसेवकों के कमांडर से लेकर पं० जगतनारायण मुल्ला तक से मिल चुका हूँ, पर सबने सर हिला दिया। गणेशजी ने कहा और मेरे हाथ पर लाकर दस रुपये का एक टिकट रख दिया और कहा, ''जाइए कल से कांग्रेस देखिए।'' ....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

नवलेखन पुरस्कारों की घोषणा

भारतीय ज्ञानपीठ ने नवलेखन प्रतियोगिता के अन्तर्गत चार लेखकों को वर्ष 2010 और 2011 के लिए पुरस्कृत करने का फैसला किया है और इसके अलावा तीन लेखकों की रचनाओं का प्रकाशन किया जाएगा। नवलेखन के लिए स्थापित इस प्रतियोगिता हेतु कहानी और काव्य विधा की 40 साल से कम उम्र के रचनाकारों से उनकी पहली कृति आमन्त्रित की गई थी।

वरिष्ठ आलोचक डॉ० नामवर सिंह की अध्यक्षता में हुई निर्णायक मण्डल की बैठक में सर्वसम्मति से 2010 के लिए विमलेश त्रिपाठी (अधूरे अंत की शुरुआत) और राजीव कुमार (तेजाब) को विजेता घोषित किया गया। वर्ष 2011 के लिए गौरव सोलंकी (सौ साल फिदा) और प्रदीप जिलवाने (जहाँ भी हो जरा-सी सम्भावना) को पुरस्कृत करने का फैसला किया गया। विजेता को पच्चीस-पच्चीस हजार रुपए की पुरस्कार राशि दी जाएगी। इसके अलावा कहानी-संग्रह 'पूर्वज' (श्रीकान्त दुबे) और 'सूरज कितना कम' (गौरव सोलंकी) और काव्य-संग्रह 'आधी रात की देवसेना' (अंशुल त्रिपाठी) को प्रकाशन योग्य पाया गया।

शलाका सम्मान अरविन्द कुमार को

हिन्दी अकादमी का वर्ष 2010-11 का सर्वोच्च शलाका सम्मान प्रसिद्ध कोशकार और हिन्दीसेवी इस वर्ष हिन्दी 'समानांतर कोश' तैयार करने वाले अरविन्द कुमार को दिया गया है। प्रसिद्ध उड़िया कवि सीताकांत महापात्र ने सम्मान-स्वरूप उन्हें दो लाख रुपये, ताम्रपत्र तथा शॉल भेंट किए।

इसके अतिरिक्त अकादमी के वर्ष 2010-11 के अन्य पुरस्कार भी प्रदान किए गए, जिसमें गद्य विधा के लिए सम्मान परमानन्द श्रीवास्तव को, विशिष्ट योगदान सम्मान रमणिका गुप्ता को, बाल-साहित्य सम्मान कृष्ण शलभ को और काव्य सम्मान गिरधर राठी को दिया गया। देवेन्द्र राज अंकुर को नाटक सम्मान तथा बृजमोहन बख्शी को ज्ञान प्रौद्योगिकी सम्मान और आलोक पुराणिक को हास्य-व्यंग्य सम्मान से सम्मानित किया गया। इन सभी पुरस्कार विजेताओं को पचास हजार रुपए की राशि, ताम्र-पत्र और शॉल भेंट किये गये।

अशोक वाजपेयी को शैलीकार सम्मान

एक प्रकाशित समाचार के अनुसार पद्मश्री डॉ० कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की स्मृति में स्थापित नवम शैलीकार सम्मान से इस बार वरिष्ठ साहित्यकार अशोक वाजपेयी को सम्मानित किया गया। आयोजित समारोह में हरियाणा के राज्यपाल जगन्नाथ पहाड़िया ने उन्हें सम्मानित किया।

करपात्र रत्न सम्मान

वाराणसी। श्रीधर्मसंघ शिक्षा मण्डल में चल रहे धर्मसम्राट स्वामी करपात्र प्राकट्योत्सव में 1 अगस्त को सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जहाँ न्याय के उद्‍भट विद्वान प्रो० श्रीराम पाण्डेय को 'करपात्र रत्न' तथा वैदिक विद्वान पण्डित त्रिभुवन दत्त पाण्डेय को 'करपात्र गौरव' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह में धर्मसंघ पीठाधीश्वर श्रीशंकर देव चैतन्य ब्रह्मचारी व विद्वान डॉ० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने दोनों विद्वानों को क्रमशः अंगवस्त्रम्, माला, प्रमाणपत्र, एक लाख व 11 हजार रुपये पुरस्कार स्वरूप दिये।

'बालवाटिका' बालसाहित्य पुरस्कारों की घोषणा

भीलवाड़ा स्थित 'बालवाटिका' द्वारा वर्ष 2011 में दिए जाने वाले नामित बालसाहित्य पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। इस पुरस्कार क्रम में बालकथा, बाल उपन्यास, बाल-नाट्यालेख, यात्रा वृत्तांत आदि विभिन्न विधाओं के लिये चयनित बाल-साहित्य लेखकों का सम्मान करते हुए उन्हें क्रमशः दो हजार पाँच सौ रुपए नकद राशि, प्रशस्तिपत्र, स्मृतिचिह्न, श्रीफल एवं अंगवस्त्र भेंटकर पुरस्कृत किया जाएगा।

'बालवाटिका' द्वारा 1 एवं 2 अक्टूबर 2011 को भीलवाड़ा में आयोज्य 'राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह' में इन रचनाकारों को पुरस्कृत किया जाएगा।

मैन बुकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार

अमेरिकी उपन्यासकार और 1998 के पुलित्जर पुरस्कार विजेता फिलिप रॉथ को इस साल मैन बुकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार दिया जाएगा। उनके विवादित उपन्यास 'पोर्टनॉय्ज कम्प्लेंट' के लिए उन्हें एक लाख अमेरिकी डॉलर (लगभग 45 लाख रुपये) के पुरस्कार के लिए चुना गया। 78 वर्षीय रॉथ ने ब्रिटेन के जॉन ले कार्रे, आस्ट्रेलिया के डेविड मैलोफ और भारतीय मूल के कनाडाई लेखक रोहिंटन मिस्त्री को भी पीछे छोड़ दिया है।

संचित स्मृति न्यास सम्मान 2011

संचित स्मृति न्यास द्वारा इस वर्ष से इतिहास, पुरातत्त्व, लोकसंस्कृति, रंगमंच, रेडियो एवं दूरदर्शन प्रसारण समाज सेवा एवं सामान्य शिक्षा तथा साहित्य-संगीत नृत्य तथा शिल्पकलाओं की शिक्षा प्रचार-प्रसार के क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान करने वाली विभूतियों को सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है।

वर्ष 2011 के लिये श्री संचित सिंह स्मृति सेवा सदन सम्मान, श्री अमृतलाल नागर स्मृति लोक सम्पदा मनीषी सम्मान, श्रीमती प्रतिभा नागर स्मृति प्रतिभा सम्मान, श्री कुमुद नागर स्मृति रंग नक्षत्र सम्मान से विभूषित की जाने वाली विभूतियाँ हैं—सर्वश्री अभयराज सिंह, डॉ० योगेश प्रवीन, प्रो० दाऊजी गोस्वामी तथा श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी।

अयोध्या प्रसाद खत्री सम्मान

प्रख्यात लेखक व दलित चिंतक डॉ० तुलसी राम को उनकी आत्मकथा 'मुर्दहिया' को केन्द्र में रखकर तीन सदस्यीय चयन-समिति, जिसमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर वीरभारत तलवार, बी०आर० अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के प्रो० डॉ० रवीन्द्र कुमार रवि एवं संयोजक वीरेन नंदा हैं, ने वर्ष 2011 का 'अयोध्या प्रसाद खत्री स्मृति-सम्मान' देने की घोषणा की है।

'डॉ० महाराजा कृष्ण जैन स्मृति पुरस्कार'

पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलांग के तत्त्वावधान में दिनांक 3 से 5 जून 2011 तक शिलांग में आयोजित राष्ट्रीय हिन्दी विकास सम्मेलन एवं अखिल भारतीय लेखक सम्मान

आचार्य निरंजननाथ सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान के सहयोग से सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में साहित्यिक पत्रिका सम्बोधन द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला सम्मान इस बार काव्य विधा पर दिया जाएगा।

पुरस्कृत रचनाकार को इक्तीस हज़ार रुपये नक़द, शॉल, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाएगा।

इस 13वें अखिल भारतीय पुरस्कार हेतु गत पाँच वर्षों (2006-2010) में प्रकाशित काव्य विधा पुस्तक की तीन प्रतियाँ लेखक, प्रकाशक या कोई भी शुभचिन्तक भिजवा सकते हैं।

यह वर्ष आचार्य साहब का जन्म शताब्दी वर्ष है। सम्मान समिति के अध्यक्ष कर्नल देशबन्धु आचार्य की घोषणा के अनुसार 2010 में साहित्य की किसी भी विधा में लेखक की प्रथम प्रकाशित कृति पर ग्यारह हजार रुपये नक़द, शॉल, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाएगा। प्रथम कृति सम्मान के लिए पुस्तक की सिर्फ़ एक प्रति ही भेजें।

- प्रविष्टियाँ 15 अगस्त 2011 के पूर्व संयोजक के पते पर अवश्य पहुँचा दें।
- निर्णायक मण्डल एवं सम्मान समिति के अध्यक्ष का निर्णय अन्तिम एवं मान्य होगा।

सम्पर्क : कमर मेवाड़ी, संयोजक—आचार्य निरंजननाथ सम्मान 2011, सम्बोधन, कांकरोली-313324, जिला-राजसमन्द (राजस्थान)

समारोह में पंचकूला से पधारी कवयित्री व कथाकार श्रीमती लक्ष्मी रूपल तथा प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० अमरसिंह वधान को 'डॉ० महाराज कृष्ण जैन स्मृति पुरस्कार' से विभूषित किया गया। मुख्य अतिथि बी०एम० लानोंग, उपमुख्यमन्त्री, मेघालय सरकार ने प्रतीक चिह्न, सम्मान पत्र एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया।

सुमन को बाल साहित्य सम्मान-2011

भीलवाड़ा, जोशी मठ उत्तराखण्ड के शंकराचार्य स्वामी माधवाश्रमजी महाराज की मठ स्थली में 'बाल बिगुल' एवं 'बाल प्रहरी' बाल पत्रिका के संयुक्त तत्त्वावधान में राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें बाल साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। बाल साहित्यकार श्याम सुन्दर सुमन को बाल साहित्य सम्मान 2011 प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० राष्ट्रबंधु थे।

कृष्ण प्रताप कथा सम्मान

समकालीन हिन्दी कहानी के चर्चित कथाकार कृष्ण प्रताप की स्मृति में वर्ष 2010 का कृष्ण प्रताप कथा सम्मान युवा एवं चर्चित कहानीकार बन्दना राग को उनके वर्ष 2010 में प्रकाशित प्रथम कहानी संग्रह युटोपिया हेतु प्रदान किया जाता है। यह निर्णय निर्णायक समिति के सदस्यों श्री विभूति नारायण राय, ममता कालिया एवं श्री दिनेश कुमार शुक्ल के द्वारा लिया गया। यह कथा सम्मान आगामी अक्टूबर माह में प्रदान किया जायेगा जिसमें कथाकार को 11000/- की धनराशि, प्रशस्ति पत्र, पदक एवं शाल आदि भेंट किये जायेंगे।

डेस्मण्ड इलियट पुरस्कार

मुंबई में पैदा हुई लेखिका अंजलि जोसेफ की पुस्तक 'सरस्वती पार्क' को डेस्मण्ड इलियट पुरस्कार के लिए चुना गया। यह पुरस्कार, जिसकी राशि 10,000 पाउण्ड है, प्रकाशक डेस्मण्ड इलियट, जिनका निधन सन् 2003 में हो गया था, के सम्मान में दिया जाता है।

21वाँ आनन्दऋषि साहित्य पुरस्कार

प्रतिवर्ष राष्ट्र संत आचार्यश्री आनन्दऋषि के जन्म दिवस पर दिया जाने वाला 'आचार्य आनन्दऋषि साहित्य पुरस्कार' इस वर्ष (21वाँ पुरस्कार) चेन्नई (तमिलनाडु) के तमिल भाषी हिन्दी साहित्यकार डॉ० एम० शेषन को प्रदान किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दक्षिण भारत के हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकार को उनके सृजनात्मक लेखन के लिए प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार में 25,000 रुपये की धनराशि, शॉल, प्रशस्ति-पत्र एवं आचार्यश्री के साहित्य का समावेश है।

साथ ही उन्हें उनके हिन्दी साहित्य में समग्र योगदान एवं उनकी कृति 'तमिलसंगम साहित्य' के लिए कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा 'बाबूलाल गोइन्का हिन्दी साहित्य पुरस्कार-2011' भी प्राप्त हुआ।

राष्ट्रभाषा सम्मान

बेंगलूर के डॉ० बी०जी० हिरेमठ जी को उनकी 40-45 वर्षों से हिन्दी सेवा कार्यों का योगदान देखकर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद ने 'राष्ट्रभाषा सम्मान' से गौरवान्वित किया है।

दैनिक भास्कर के डॉ० महेश परिमल को मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार

दैनिक भास्कर के भोपाल संस्करण में कार्यरत डॉ० महेश परिमल का चयन मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा घोषित दुष्यन्त कुमार पुरस्कार के लिए किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें उनके ललित निबन्धों की किताब 'लिखो पाती प्यार भरी' दिया जाएगा। पुरस्कार में उन्हें 21 हजार दिए जाएँगे।

'साहित्य-शिरोमणि' सम्मान प्रदत्त

विगत दिनों लखनऊ के रवीन्द्र सभागार में उत्तर प्रदेश हिन्दी-उर्दू अवार्ड समिति द्वारा सर्वश्री हरीश नवल, प्रेम जनमेजय और ज्ञान चतुर्वेदी को 'साहित्य-शिरोमणि' सम्मान प्रदान किया गया। अध्यक्ष प्रो० गोपीचंद नारंग थे। श्री सर्वेश अस्थाना ने संचालन और संयोजन किया। व्यंग्यकार श्री सूर्यकुमार पाण्डेय को भी पुरस्कार प्रदान किया गया।

ममता कालिया व साजिद रशीद को 'लमही सम्मान'

लखनऊ, कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयन्ती पर शहर में दो कथा लेखकों को सम्मानित किया गया। त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' द्वारा लोकप्रिय कथाकार ममता कालिया और अफसाना निगार स्व० साजिद रशीद को 'लमही सम्मान' दिया गया। वरिष्ठ साहित्यकार कामतानाथ ने इन दोनों विभूतियों को अलंकृत किया। स्व० रशीद का सम्मान उर्दू लेखिका गजल जैगम ने ग्रहण किया। कामतानाथ ने कहानी 'सोने के दाँत' के विशेष जिक्र के साथ स्व० रशीद के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। ममता कालिया के लिए उन्होंने कहा कि, 'प्रेमचंद और ममता कालिया का नारी विमर्श एक है।' सम्मानस्वरूप नकद पुरस्कार के अतिरिक्त स्मृति चिह्न भी दिया गया।

कवि अब्दुल जब्बार को बोधि सम्मान

30 जून उदयपुर, आचार्य महाश्रमण जी के सान्निध्य में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रख्यात कवि अब्दुल जब्बार को वर्ष 2011 का बोधि सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने कवि जब्बार को सहज, सरल एवं साधारण व्यक्ति बता कर एक असाधारण कवि बताया एवं निरन्तर देश एवं समाज हित में निर्भय होकर सृजन करते रहने का आह्वान किया। आयोजन समिति के प्रमुख लक्ष्मण सिंह कर्नावट ने बताया कि सम्मान में प्रतीक चिह्न, सम्मान पत्र, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान राशि प्रदान की जाती है।

पी-एच०डी० उपाधि

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् की प्रचारिका श्रीमती टी०एन० शोभा को 'शिवानी के उपन्यासों में समाज और नारी' नामक शोध प्रबन्ध के लिए बेंगलूरु विश्वविद्यालय ने डाक्टरेट उपाधि प्रदान की है।

साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान हेतु साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमन्त्रित।

विधाएँ 1. कविता (काव्य), 2. कथा-साहित्य, 3. नाटक (रंगमंच), 4. बाल-साहित्य, 5. पत्रकारिता, 6. संस्कृत, 7. राजस्थानी।

प्रत्येक विधा में से एक साहित्यकार का चयन किया जायेगा। सभी चयनित युवा साहित्यकारों को सम्मान में प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्र एवं रु० 5000/- नकद राशि न्यास द्वारा भेंट की जायेगी।

सत्रहवें सम्मान-समारोह हेतु प्रविष्टि शामिल करने के लिए 1 अगस्त 2011 को 40 वर्ष तक की आयु के(जन्मतिथि प्रमाण पत्र संलग्न करें) साहित्यकार ही अपने छाया-चित्र, आत्मकथ्य (बायोडाटा) अपनी सम्पूर्ण कृतियों का समीक्षात्मक परिचय सहित प्रकाशित नमूने की किसी पुस्तक के साथ 31 अगस्त 2011 तक निम्न पते पर भेज सकते हैं।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ-226 020

दूरभाष : 0522-6532653

केदार सम्मान हेतु प्रवृष्टियाँ आमन्त्रित

समकालीन हिन्दी कविता का महत्त्वपूर्ण सम्मान केदार सम्मान, वर्ष 2011 हेतु प्रकाशकों, कविता के शुभचिन्तकों एवं कवियों से प्रवृष्टियाँ आमन्त्रित की जाती हैं। वर्ष 2006 से 2011 के मध्य प्रकाशित कविता संकलन दो प्रतियों में आमन्त्रित किये जाते हैं। इस महत्त्वपूर्ण सम्मान में आजादी के बाद जन्में रचनाकार ही शामिल हो सकते हैं। इसमें वही प्रवृष्टियाँ स्वीकार होंगी जिनकी रचनाधर्मिता केदारनाथ अग्रवाल की परम्परा में वैज्ञानिक चेतना की हिमायती हो। प्रवृष्टियाँ 30 नवम्बर 2011 तक शामिल की जायेंगी।

रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्यविज्ञान

मूल उपदेष्टा : महामहोपाध्याय पद्मविभूषण डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

इस ग्रन्थ में जो कुछ अंकित है वह कोरी कल्पना नहीं है। गुरुमुख से सुने गये, प्रामाणिक ग्रन्थों में वर्णित किये गये तथा प्रत्यक्ष द्रष्टागण द्वारा देखकर पुस्तकाकृति में प्रकाशित किये गये तथ्यों पर यह ग्रन्थ आधारित है।

इसमें योगिराजाधिराज विशुद्धानन्द के शिष्य श्री अक्षयकुमार दत्त गुप्त, महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज महोदय के वचनों का मुख्यत: समावेश है।

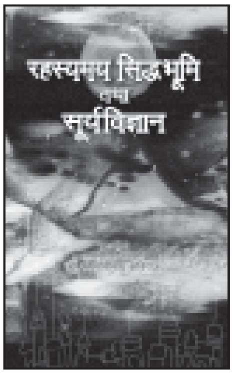

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 152

सजिल्द : 978-81-7124-792-9 • रु० 200.00

अजिल्द : 978-81-7124-776-9 • रु० 90.00

(*पुस्तक के एक अध्याय का अंश*)

वाराणसी में सूर्यविज्ञान

—डॉ० पॉल ब्रन्टन

दूसरे दिन चार बजते-बजते मैं कविराजजी को साथ लेकर विशुद्धानन्दजी के यहाँ पहुँच गया। उस बड़े कमरे में पाँव रखते ही हमने आचार्य की अभ्यर्थना की। वहाँ पर उस समय और भी छ: शिष्य मौजूद थे।

विशुद्धानन्दजी ने मुझे अपने पास बुलाया तो मैं उनकी गद्दी के बहुत ही निकट बैठ गया।

उनका सबसे पहला प्रश्न यह था :

"मेरी करामात देखना चाहते हो?"

"जी हाँ, आपका बड़ा एहसानमन्द रहूँगा।"

पण्डित कविराज ने कहा—"अपना रूमाल दो। रेशमी हो तो बेहतर है। जैसी खुशबू चाहते हो, पा सकते हो। केवल एक आतशी शीशे भर की जरूरत है और सूर्य की रोशनी की।"

सौभाग्य से मेरी जेब में रेशमी रूमाल निकल आया। मैंने उसको जादूगर के हाथ में दे दिया। उन्होंने एक छोटा आतशी शीशा निकाला और कहा—"मैं इसमें सूर्य की किरणों को केन्द्रीभूत करना चाहता हूँ पर सूर्य की इस समय की स्थिति और कमरे की छाया के कारण यह काम अच्छी तरह नहीं किया जा सकेगा। कोई आँगन में जाकर शीशे के जरिये सूर्य की किरणों को भीतर पहुँचा सके तो सारी कठिनाई दूर होगी। आप जो चाहें वह खुशबू हवा से ही पैदा की जा सकती है। कहिये कौन-सी सुगन्धि चाहिये?"

"क्या आप बेले की सुगन्धि पैदा कर सकते हैं?"

आचार्य ने अपने बाँयें हाथ में रूमाल लिया और उसके ऊपर शीशा रक्खा। दो क्षण तक सूर्य की किरणें रेशम पर थिरक उठीं। उन्होंने काँच नीचे रख दिया और मुझे रूमाल वापिस कर दिया। मैंने उसको नाक पर लगा कर देखा तो बेले की भीनी महक से तबियत फड़क उठी।

मैंने रूमाल को गौर से परखा। कहीं नमी का नाम तक न था। कोई इत्र छिड़का गया हो सो भी बात नहीं थी। मैं हैरान था और बूढ़े की ओर अधखुली दृष्टि से सन्देह के साथ ताकने लगा। वे फिर से यह करामात दिखाने को तैयार थे।

अबकी बार मैंने गुलाब की खुशबू चाही। विशुद्धानन्दजी प्रयोग करने लगे तो मैं उनकी ओर गौर से ताकने लगा। उनके हाथों और पाँवों का हिलना-डुलना, उनके चारों ओर जो कोई चीज धरी थी, एक भी बात मेरी नजरों से नहीं बची। उनके बलिष्ठ बाहु और बेदाग पहरावे की बड़े गौर से मैंने परीक्षा ली लेकिन शंका के लिए कहीं जगह नहीं थी। पहले के समान ही उन्होंने प्रयोग किया और गुलाब के मधुर सौरभ से रूमाल का दूसरा किनारा परिमिलित हो उठा।

तीसरी बार मैंने बनफशे के फूल की सुगन्धि चाही। अबकी बार भी वे अपने प्रयोग में सफल हुए।

विशुद्धानन्दजी अपनी सफलता पर फूले नहीं जाते। वे इन सारी विभूतियों को बिलकुल मामूली ही समझते हैं। उनका गम्भीर मुखमण्डल भावनाओं के उतार-चढ़ाव से कुछ भी प्रभावित नहीं होता।

वे एकबारगी बोल उठे—"अब मैं एक नई सुगन्धि पैदा करूँगा, एक नये फूल की खुशबू दिखा दूँगा। वह तिब्बत में ही मिलता है।"

उन्होंने रूमाल के आखिरी कोरे पर, जो अब तक छुआ नहीं गया था, सूर्य-रश्मि को केन्द्रीभूत किया। एक अजीब परिमल आने लगा। वह मेरे लिए एकदम नया था।

कुछ चकित हो मैंने रूमाल जेब में रख लिया। यह सारी घटना मानों कोई करामात मालूम होने लगी। सारे फूलों के इत्र उन्होंने अपने लबादे में तो छिपा नहीं रक्खे थे? लेकिन प्रश्न यह था कि कितने प्रकार के इत्र वे छिपाये रख सकते हैं। मेरे पूछने तक वे क्या जानते थे कि मैं कौन-सी सुगन्धि पसन्द करूँगा। उनके उस सादे लबादे में कितने इत्र छिप सकते हैं? उसके अतिरिक्त जादू दिखाते हुए उन्होंने एक भी बार अपने लबादे के अन्दर हाथ नहीं जाने दिया था।

मैंने उनके काँच की परीक्षा करने की अनुमति माँगी। वह एक मामूली काँच था। तार के ढाँचे में बँधा था और उसमें तार का एक दस्ता भी लगा था। उसमें सन्देह का कोई स्थान नहीं था।

यह भी एक बात थी कि प्रेक्षकों में अकेला मैं ही तो था नहीं। छ:-सात लोग उनकी ओर टकटकी लगाये देख रहे थे। पण्डित कविराजजी ने मुझको इस बात का विश्वास दिलाया कि सभी प्रेक्षक सच्चे, ईमानदार और अपनी जिम्मेदारी जानने वाले उच्च विचार के व्यक्ति हैं।

शायद यह सब सम्मोहन विद्या का एक उदाहरण तो नहीं है? यदि ऐसा हो तो इसकी बड़ी सुलभता से परीक्षा ली जा सकती है। जब मैं घर लौटूँ, अपने साथियों को रूमाल दिखला दूँ।

विशुद्धानन्दजी ने और एक बात बता दी। वे मुझे अपनी एक अद्‌भुत विभूति दिखाना चाहते थे जो वे बहुत ही विरले किया करते थे। उन्होंने कहा कि इस प्रयोग के लिए कड़ी धूप की जरूरत होती है। उस समय सूर्य ढलना ही चाहता था। सन्ध्या की लाली हर कहीं फैल रही थी। अत: मुझसे कहा गया कि फिर कभी दुपहर के वक्त आ जाऊँ। उस समय तत्काल के लिए मुरदों को फिर से जिलाने की अद्‌भुत बात दिखाने का वचन दिया था।

मैंने घर पहुँच कर तीन सज्जनों को रूमाल दिखाया। हर एक को फूलों की खुशबू आती दिखायी दी। इसलिए इन सारी बातों को सम्मोहन विद्या कहकर एक चुटकी में उड़ा नहीं दे सकता था। न इसको छल-कपट ही कह कर मैं तुष्ट हो सकता था।

❑ ❑ ❑

दुबारा मैं जादूगर के घर पहुँच गया। उन्होंने मुझको शुरू में ही बता दिया कि वे छोटे जानवरों को ही जिला सकते हैं। प्राय: वे चिड़ियों के साथ प्रयोग किया करते थे।

एक छोटी गौरैया की गरदन मरोड़ डाली गयी। एक घण्टे तक वह हमारी आँख के सामने रक्खी गई ताकि हमें विश्वास हो जाय कि वह सचमुच मरी ही है। उसकी आँखें अचल थीं; बदन न हिलता था न डुलता था। सारी देह तन कर हमको अपनी दारुण कहानी सुना रही थी। एक भी ऐसा चिह्न न था कि हमें उसके जीवित होने का भ्रम पैदा हो।

जादूगर ने काँच निकाला और सूर्य की किरणों को चिड़िया की आँखों पर केन्द्रस्थ कर दिया। कुछ मिनट तक कोई विशेषता देखने में नहीं आयी।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

संगोष्ठी/लोकार्पण

जीवन व प्रकृति का संगीत है ललित निबन्ध

''ललित निबन्ध न तो खेत-बाड़ी में पैदा होता है, ना ही हाट-बाजार में बिकता है। वह तो भारतीय जीवन के सनातन सामाजिक सरोकारों की पैरवी करता हुआ इस कायनात (संसार) की सुन्दरता को शब्द-शब्द में महफूज रखने वाली विधा है। विश्वग्राम की चुनौतियों और बाजार की बेचैनियों के इस दौर में ललित निबन्ध आम आदमी की आत्मा का आईना बनकर ज्वलंत सवालों के उत्तर खोज रहा है।''

हिन्दी के विख्यात ललित निबन्धकार डॉ॰ श्रीराम परिहार ने यह उद्‌गार वनमाली सृजन पीठ द्वारा आयोजित 'पाठ और संवाद' समारोह में व्यक्त किए। राजधानी के साहित्य प्रेमियों से मुखातिब श्री परिहार ने इस अवसर पर अपनी बहुचर्चित रचना 'आकाशप्रिया के नाम पाती' का भावपूर्ण पाठ किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष डॉ॰ रमेश दवे ने कहा कि डॉ॰ परिहार के निबन्ध कोरी भावुकता की उपज नहीं होते, उनमें अपने समय का गहरा चिन्तन होता है। दवे ने कहा कि कविता, कहानी और व्यंग्य के बाद ललित निबन्ध के पाठ की परम्परा का सूत्रपात हिन्दी जगत की ऐतिहासिक घटना है।

हिन्दी उर्दू मंच का उद्‌घाटन

मुम्बई, हेमंत फाउण्डेशन तथा उर्दू मरक़ज़ द्वारा स्थापित हिन्दी उर्दू मंच का उद्‌घाटन समारोह 25 जून को उर्दू मरक़ज़ सभागार में सम्पन्न हुआ। मंच की अध्यक्ष चर्चित लेखिका संतोष श्रीवास्तव ने इन खूबसूरत पंक्तियों से मंच के उद्‌देश्यों पर प्रकाश डाला—हिन्दी की एक बहन कि जो उर्दू ज़बान है। वो इफ़्तख़ारे कौम है भारत की शान है। हिन्दी ने एकता के गुन्चे खिलाए हैं। उर्दू बहारे, गुलशने हिन्दुस्तान है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ॰ अब्दुल सत्तार दलवी ने कहा कि हेमंत फाउण्डेशन ने हिन्दी उर्दू मंच की स्थापना कर प्रशंसनीय कार्य किया है। उर्दू मरक़ज़ के अध्यक्ष ज़ुबैर आज़मी ने हिन्दी-उर्दू साहित्यकारों के सम्मेलन की रिवायत को आगे बढ़ाने और दूर तक ले जाने की बात की। अन्त में मुशायरा और कवि सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ।

काव्यकृतियों का लोकार्पण

पिछले दिनों ग्राम-मझाड़ी में सम्पन्न वैदिक महायज्ञ और आर्य समाज महोत्सव में गुरुकुल महाविद्यालय, शादीपुर (यमुनानगर) के डॉ॰ राजकिशोर शास्त्री गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व कुलपति डॉ॰ वेदप्रकाश शास्त्री एवं वैदिक आश्रम, अशदपुर, सरसावा (सहारनपुर) के आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने संयुक्त रूप से श्री पूरण सिंह सैनी की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'एड्स शतक' एवं 'प्रिया स्मृति' का लोकार्पण किया।

'आधी ज़िन्दगी पूरा सच' लोकार्पित

सहारनपुर में नगर के कवि हरिराम पथिक के सद्यः प्रकाशित मुक्तक संग्रह 'आधी ज़िन्दगी पूरा सच' का लोकार्पण एक विशेष समारोह में हुआ। कादम्बिनी के पूर्व कार्यकारी सम्पादक श्री विजय किशोर मानव (समारोह अध्यक्ष), प्रख्यात साहित्यकार एवं पत्रकार डॉ॰ कमलकांत सुधाकर (मुख्य अतिथि) एवं श्री शरदेन्दु शर्मा (पत्रकार) ने संयुक्त रूप से मुक्तक संग्रह का विमोचन किया।

हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा '33वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन विगत दिनों किया गया।

संगोष्ठी का संचालन करते हुए समारोह के संयोजक एवं संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ॰ दिनेश चन्द्र चमोला ने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान की ऊर्ध्वमुखी यात्रा का लाभ जन-सामान्य को भरपूर रूप में तभी मिल पाएगा जब उसकी अभिव्यक्ति विशेषतः हिन्दी में तथा सामान्यतः भारतीय भाषाओं में भी सम्भव होगी।

संगोष्ठी सत्र में सर्वप्रथम डॉ॰ देबाशीष घोष ने 'उत्तराखण्ड हिमालय से एक सूक्ष्मजीवीय एस्टरेस : शुद्धिकरण तथा अभिलक्षणन' विषय पर, श्री राकेश कुमार ने 'जैव ईंधन-ड्रॉप इन वैकल्पिक विमानन ईंधन' विषय पर, सुश्री मनीषा सहाय ने 'टार सैंड' विषय पर, सुश्री नीलिमा शाह ने 'सौर सेल रचना में प्रोटीन का योगदान' विषय पर, डॉ॰ एच॰यू॰ खान ने 'घरेलू इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की अत्यधिक खपत : वरदान या अभिशाप' विषय पर प्रभावी प्रस्तुतियाँ दीं।

प्रेमचंद की 131वीं जयन्ती : तीन दिवसीय महोत्सव

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 131वीं जयन्ती पर महोत्सव के पहले दिन 29 जुलाई को उनके पैतृक गाँव लमही में आयोजित समारोह में उद्‌घाटन सत्र के अवसर पर मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के संस्कृति मन्त्री सुभाष पाण्डेय ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद में गाँव व किसान की आत्मा बसती थी। मुंशी प्रेमचंद स्मारक शोध एवं अध्ययन केन्द्र की स्थापना के लिए उन्होंने संस्कृति विभाग की ओर से लमही गाँव में हस्तान्तरित 0.249 हेक्टेयर भूमि के कागजात काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वीसी प्रो॰ डी॰पी॰ सिंह को सौंपा। साथ ही अध्ययन केन्द्र के शिलापट्ट का अनावरण किया।

चौकाघाट स्थित सांस्कृतिक संकुल में 29 जुलाई को मुंशी प्रेमचंद लमही महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। प्रदेश के संस्कृति मन्त्री सुभाष पाण्डेय ने दीप प्रज्जवलित कर तीन दिवसीय महोत्सव का उद्‌घाटन किया। तीन दिवसीय कार्यक्रम की शुरुआत सितार व वायलिन पर की गई जुगलबंदी के साथ हुई। इस अवसर पर मुंशी प्रेमचंद की कालजयी रचना 'सभ्यता के रहस्य' पर आधारित 'परदे में रहने दो' नाटक का मंचन किया गया। इस नाटक में समाज में व्याप्त पैसे के वर्चस्व को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित किया गया। प्रख्यात गायिका गिरिजा देवी की शिष्या ममता शर्मा ने इस दौरान कजरी सुनाई। अन्त में सेतु रंग मंडली के सलीम राजा के निर्देशन में मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित 'सुजान भगत' नाटक का लोकनाट्य शैली में मंचन किया गया। इसी क्रम में राज्य ललित कला अकादमी के सौजन्य से चित्रकला प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न संस्थाओं के छात्र-छात्राओं द्वारा मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं पर आधारित पेटिंग्स प्रदर्शित की गयीं।

महोत्सव के दूसरे दिन 30 जुलाई को सांस्कृतिक संकुल, चौकाघाट सभागार के मंच पर अवध के कलाकारों ने मुंशी प्रेमचंद के 'ईदगाह' को अपने यशस्वी अभिनय से जीवन्त कर दिया। वहीं प्रेमचंद की कहानी पर आधारित नाटक 'गुल्ली डंडा' व 'बड़े भाई साहब' भी लोगों के दिल को छू गई। इस अवसर पर कजरी, दादरा, लोकगायन, विभिन्न कवियों व शायरों की रचनाओं ने लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

महोत्सव के अन्तिम दिन 31 जुलाई को मढ़वा, लमही गाँव के तालाब के पास विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। सेतु-रंगमण्डल की ओर से प्रेमचंद की कहानी पर आधारित 'सुजान भगत' नाटक का मंचन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि व चन्दौली के सांसद रामकिशुन ने त्रैमासिक पत्रिका 'प्रेमचंद पथ' का विमोचन किया। दूसरी ओर प्रेमचंद के स्मारक स्थल पर भी संस्कृति विभाग के सौजन्य से विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। बच्चों ने प्रेमचंद की कहानी 'मंत्र', 'मूठ' पर आधारित 'सच है कि झूठ' व 'नेताजी का चश्मा' नाटक का मंचन किया। इस अवसर पर विद्यापीठ हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष श्रद्धानन्द व डॉ॰ सुरेन्द्र प्रताप ने भी विचार व्यक्त किये। शहनाई वादन, लोकगीत की प्रस्तुति ने लोगों को बाँधे रखा।

'सोच विचार' काशी अंक (दो) लोकार्पित

वाराणसी, साहित्यिक संघ द्वारा गुरुवार 7 जुलाई की संध्या आयोजित समारोह में मासिक पत्रिका 'सोच विचार' के काशी अंक (दो) का लोकार्पण करते हुए प्रख्यात विद्वान और इंदिरा गाँधी साहित्य कला अनुसंधान केन्द्र के निदेशक प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि पाण्डित्य और विद्वत्ता अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण है किन्तु स्थायी महत्त्व के उल्लेखनीय कार्य तो सृजनशील मन के द्वारा ही सम्भव हो पाते हैं। सर्जना के सौन्दर्य का आकर्षण ही अलग और अद्वितीय होता है तथा यह मासिक पत्रिका 'सोच विचार' के काशी अंक-एक तथा दो की प्रस्तुति में दिखलाई पड़ता है। काशी के वैविध्यपूर्ण जीवन को उसकी समग्रता में देखने-दिखाने के अब तक जितने प्रयास किए गए हैं उनमें 'सोच विचार' का यह प्रयास निश्चय ही स्तुत्य एवं सराहनीय है। विशेषांक के अतिथि सम्पादक डॉ० भानुशंकर मेहता का सम्मान करते हुए प्रो० त्रिपाठी ने कहा कि चिकित्साशास्त्र से सम्बद्ध होते हुए भी डॉ० मेहता काशी-विद्या के चलते-फिरते विश्वकोश हैं। साहित्य, संगीत, नाटक तथा काशी के लोकजीवन के विविध पक्षों के संवर्धन के लिए उन्होंने जितना कार्य किया है, उसका मूल्यांकन इतिहास करेगा।

विशेषांक के अतिथि सम्पादक डॉ० भानुशंकर मेहता ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि काशी हजार पहलों वाला एक हीरा है जिसके एक-एक पहल में इतने अनोखे रंग हैं कि उन्हें शब्दों में बाँधना बहुत कठिन है। काशी को उसकी समग्रता में जानना और पहचानना वास्तव में भारतवर्ष की सामासिक संस्कृति का स्वरूप जान लेना है। वसुधैव कुटुम्बकम का सच्चा माडल देखना हो तो काशी को देखना चाहिए। अपने अनुभवों का सन्दर्भ देते हुए डॉ० मेहता ने बतलाया कि मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे लम्बे समय तक इस नगर में रहने तथा इसे देखने, जानने और जीने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहां की महान विभूतियों के सान्निध्य में मैंने जो कुछ प्राप्त किया, उसे आगे के समाज को सौंपना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

समारोह की अध्यक्षता प्रो० वंशीधर त्रिपाठी, स्वागत पं० श्रीकृष्ण तिवारी, धन्यवाद प्रकाश श्री पद्माकर चौबे व अतिथियों का सम्मान सम्पादक नरेन्द्रनाथ मिश्र ने किया। विशेषांक की रूपरेखा पर प्रकाश डाला पत्रिका के संरक्षक और संचालक डॉ० जितेन्द्र नाथ मिश्र ने।

इस अवसर पर अनेकानेक विद्वान, साहित्यकार आदि उपस्थित थे।

शुभदा पाण्डेय की बालकृति का लोकार्पण

दिल्ली, साहित्यिक संस्था 'साहित्य भारती' की ओर से साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित समारोह में श्रीमती शुभदा पाण्डेय की बाल काव्यकृति 'मेले की सैर' का लोकार्पण प्रख्यात कवि समालोचक श्री लीलाधर मंडलोई एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा किया गया। श्री मंडलोई ने कहा कि आज के बदलते परिवेश में, जब व्यक्ति उपभोक्ता में तबदील होता जा रहा है, अच्छे बाल साहित्य की बहुत ज़रूरत है। उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह कृति बच्चों को मेलों और उत्सवों की दुनिया में ले जाती है और उन्हें संस्कारित करती है।

'पत्थरों की कोख से' का लोकार्पण

श्री श्यामसिंह चौहान के दूसरे कविता संग्रह 'पत्थरों की कोख से' का लोकार्पण साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 28 जून 2011 को प्रख्यात हिन्दी कवि-आलोचक और ललित कला अकादेमी के अध्यक्ष श्री अशोक वाजपेयी ने किया।

हिमाचली भाषा सम्मान समारोह

साहित्य अकादेमी के नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने शिमला में अकादेमी द्वारा आयोजित 'भाषा सम्मान अर्पण समारोह' में हिमाचली भाषा के लिए पुरस्कृत लेखकों को सम्मानित करते समय कहा कि कोई भी भाषा या बोली किसी मान्यता या प्रमाण से सिद्ध नहीं होती, बल्कि उस भाषा में लिखा जा रहा उत्कृष्ट लेखन ही उसे समृद्ध बनाता है। 2 जुलाई को शिमला में सम्पन्न आयोजन में हिमाचली भाषा के लिए दो साहित्यकारों गौतम चंद शर्मा 'व्यथित' और प्रत्यूष गुलेरी को 'भाषा सम्मान 2007' से सम्मानित किया गया। दोनों साहित्यकारों को स्मृति चिह्न और 25-25 हजार रुपये की सम्मान राशि दी गई। समारोह के मुख्य अतिथि हिन्दी के वरिष्ठ और लोकप्रिय साहित्यकार पत्रकार हिमांशु जोशी थे।

बहुभाषी रचना-पाठ कार्यक्रम

साहित्य अकादेमी, दिल्ली ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के साथ 9-10 जुलाई 2011 को बहुभाषी रचना-पाठ का आयोजन किया। कार्यक्रम के उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष प्रो० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की और मुख्य अतिथि मलयालम भाषा के प्रसिद्ध कवि मैथ्यू थॉमस थे। माधव कौशिक कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में कहानी-पाठ का आयोजन हुआ। जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह ने की। जिन्होंने अपनी 'खरोंच' शीर्षक कहानी का पाठ किया।

अगले दिन प्रथम दो सत्रों में काव्य-पाठ का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र के काव्य-पाठ का प्रारम्भ वरिष्ठ कवि ज्ञानेन्द्रपति की कविताओं से हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष और वरिष्ठ कवि आलोचक श्री विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने की। जिसमें हिन्दी के वरिष्ठ कवि ज्ञानेन्द्रपति, बांग्ला के प्रसिद्ध कवि अमिताभ चौधुरी, ओड़िया कवियित्री प्रवासिनी महाकुड आदि ने काव्यपाठ किया।

कविता-पाठ के दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध तमिल कवि सिर्पी बालसुब्रहमण्यम ने की जिसमें श्रीकृष्ण तिवारी, वशिष्ठ अनूप, रामाज्ञा राय, ओम निश्चल, सदानंद साही आदि के अतिरिक्त कोंकणी के प्रसिद्ध कवि पुंडलिक नायक और अकादेमी के हिन्दी परामर्श मण्डल के संयोजक माधव कौशिक ने भी कविता-पाठ किया।

बुद्धिसेन शर्मा का काव्य पाठ सम्पन्न

साहित्य अकादेमी में 13 जुलाई 2011 को राजभाषा मंच कार्यक्रम के अन्तर्गत इलाहाबाद से पधारे वरिष्ठ कवि बुद्धिसेन शर्मा का काव्य पाठ आयोजित किया गया। छन्दों की सभी विधाओं को लिखने वाले 71 वर्षीय बुद्धिसेन शर्मा ने डेढ़ घण्टों तक चले इस कार्यक्रम में मुख्यत: दोहे, गज़ल और गीत सुनाए।

लोकार्पण सम्पन्न

22 मई को नई दिल्ली में वयोवृद्ध कवयित्री श्रीमती चंपा वैद के कविता संग्रह 'आवाज़ें' और उनकी चुनिंदा कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवाद की पुस्तक 'द म्यूज़िक ऑफ बोन्स' तथा चर्चित कलाकार श्री मनीष पुष्कले की कृति 'सफेद साखी' का लोकार्पण वरिष्ठ कवि कुँवर नारायण ने, अंग्रेज़ी अनुवाद का वरिष्ठ चित्रकार व कथाकार श्री रामकुमार ने और कला सम्बन्धी पुस्तक का वरिष्ठ चित्रकार श्री सैयद हैदर रज़ा ने किया। इस अवसर पर श्री अशोक वाजपेयी ने चंपा वैद की कविताओं का पाठ किया।

'काल तुझसे होड़ है मेरी'

वाराणसी, प्रख्यात कवि शमशेर की कविता 'काल तुझसे होड़ है मेरी' के मंचन से समाज को एक संदेश मिला। नागरी नाटक मण्डली के मंच पर हुई इस प्रस्तुति ने बताया कि समाज में कटुता दूर करने के लिए प्रेम, स्नेह व सौन्दर्य की भावना कैसे लाई जाए। डीडी भारती व दूरदर्शन के वाराणसी केन्द्र की ओर से इस मंच पर दो परिसंवादों के साथ ही शमशेर की रचनाओं का 'संगीतमय मंचन' भी किया गया। परिसंवाद में डॉ० काशीनाथ सिंह, डॉ० ज्ञानेन्द्रपति व मंगलेश डबराल ने शमशेर की कविताओं के सार को अपने शब्दों में प्रस्तुत किया। संचालन युवा कवि व्योमेश शुक्ल ने किया।

मुंशीजी की रचनाएँ सही अर्थों में जनसाहित्य

वाराणसी, मुंशी प्रेमचंद की जयन्ती पर न्यायमूर्ति गणेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं से एक ऐसी मशाल जलाई जिसमें आज भी हम अपनी समस्याओं का हल ढूँढ़ सकते हैं। नागरी प्रचारिणी सभा में प्रेमचंद की जयन्ती पर 31 जुलाई को आयोजित समारोह की अध्यक्षता

करते हुए उन्होंने उक्त बातें कहीं। मुख्य अतिथि कवि पं० श्रीकृष्ण तिवारी ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य सही अर्थों में जनसाहित्य है तथा वह सही माने में जनसाहित्यकार हैं। अनेकानेक विद्वानों ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

ज्ञान का भण्डार है रैंडम क्यूरियोसिटी

प्रो० यशपाल एवं डॉ० राहुल पाल लिखित अंग्रेजी पुस्तक 'रैंडम क्यूरियोसिटी' का नई दिल्ली के इण्डिया इंटरनेशनल सेन्टर में 31 मई को भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने लोकार्पण किया।

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए डॉ० कलाम ने कहा, '' 'रैंडम क्यूरियोसिटी' वस्तुतः ज्ञान का भण्डार है। डॉ० यशपाल और डॉ० राहुल पाल ने हम लोगों, विशेषकर युवाओं के लिए एक महती कार्य किया है। यह पुस्तक एक मित्र है और मेरा बड़ा मित्र। मैं कल्पना करता हूँ कि जब मैं सात दशक पहले एक छात्र था तब कोई ऐसी पुस्तक रही होती।''

काका कालेलकर हिन्दी जीवनी विमोचित

पिछले दिनों शिक्षक भवन, पुणे (महाराष्ट्र) में हिमाक्षरा राष्ट्रीय साहित्य परिषद्, वर्धा द्वारा अपना राष्ट्रीय साहित्य एक दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। उस सम्मेलन में काका साहेब कालेकर की 125वीं जयन्ती मनाई गई।

सम्मेलन में श्री रमेश मिलन द्वारा लिखित काका कालेलकर हिन्दी जीवनी का विमोचन किया गया। भारत के विभिन्न प्रदेशों से पधारे हुए साहित्यकारों को उनकी साहित्य सेवा के लिये काका साहेब कालेलकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसके अन्तर्गत हिन्दी की उल्लेखनीय सेवाओं एवं प्रकाशित कृतियों के आधार पर प्रो० श्यामलाल उपाध्याय, मंत्री भारतीय वाङ्मय पीठ, कोलकाता को गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली द्वारा आचार्य काका कालेलकर 'साहित्य सम्मान' से विभूषित किया गया। हिमाक्षरा राष्ट्रीय साहित्य परिषद् ने इस वर्ष 2011 का अतिविशिष्ट सम्मान गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा की मन्त्री कुसुमबेन शाह को दिया।

तीन पुस्तकें लोकार्पित

पिछले महीने नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में कवि उद्भ्रान्त की तीन पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। प्रसिद्ध आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने उद्भ्रान्त के काव्य-संग्रह 'अस्ति' का लोकार्पण किया, जबकि डॉ० शिवकुमार मिश्र और डॉ० नित्यानंद तिवारी ने क्रमशः 'अभिनव पांडव' (महाकाव्य) और 'राधामाधव' (प्रबन्ध काव्य) का लोकार्पण किया।

लोकार्पण के बाद डॉ० नामवर सिंह की अध्यक्षता में 'समय, समाज, मिथक : उद्भ्रान्त का कवि-कर्म' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ० शिवकुमार मिश्र, डॉ० नित्यानंद तिवारी, लीलाधर मंडलोई, डॉ० बली सिंह, संजीव कुमार और धीरंजन मालवे ने अपनी बात रखी। डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि उद्भ्रान्त जैसी रचनाएँ कर रहे हैं, वह प्रतिभा का विस्फोट है। उनके ऐसे विस्फोट से आने वाले दिनों में साहित्य जगत् रू-ब-रू होता रहेगा।

'सुबह से सुबह तक' का लोकार्पण

भोपाल। 'कवि, कथाकार, चिंतक, वरिष्ठ गीतकार, इंजीनियर श्री कुँवर किशोर टण्डन की काव्य-रचनाओं में पारम्परिक भावनाओं के साथ-साथ समकालीन यथार्थ को बखूबी उजागर किया गया है। जो गीत हृदय में प्रवेश करे वही सही गीत है'। ये उद्गार इस सदी के महान गीतकार डॉ० गोपालदास नीरज ने श्री टण्डन के काव्य संग्रह 'सुबह से सुबह तक' का लोकार्पण करते हुए व्यक्त किए।

विष्णु प्रभाकर जन्मशती का उद्घाटन

सुप्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर (जन्म : 21 जून, 1912) की जन्मशती का उद्घाटन समारोह दिल्ली में साहित्य अकादेमी सभागार में दिनांक 21 जून, 2011 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन श्री विष्णु प्रभाकर जन्मशती समारोह समिति एवं विष्णु प्रभाकर प्रतिष्ठान द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध नाट्यकार एवं आलोचक डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय ने की। मुख्य अतिथि डॉ० महीप सिंह थे। विशिष्ट अतिथियों में डॉ० अशोक चक्रधर, असग़र वजाहत एवं डॉ० राजकुमार सैनी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में सुश्री पद्मा सचदेव द्वारा निर्मित विष्णु प्रभाकर पर बनी फिल्म का अंश दिखाया गया तथा उनकी कहानी 'जीवन का एक और रूप' का नाट्य-पाठ उनकी सुपुत्री अर्चना प्रभाकर द्वारा किया गया। विष्णुजी के सुपुत्र अतुल कुमार द्वारा सम्पादित उनके जीवन और विचार सूत्रों पर आधारित सचित्र पुस्तिका 'विष्णु प्रभाकर : एक झलक' का लोकार्पण भी किया गया। साहित्यकारों और विष्णु प्रभाकर साहित्य के अनुरागीगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अध्यक्ष डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा कि विष्णु प्रभाकर के साहित्य के पुनर्मूल्यांकन का कार्य जन्मशती वर्ष में अवश्य किया जाना चाहिए, क्योंकि उनके साहित्य में बहुत कुछ ऐसा है, जो भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणायादक और अनुकरणीय है। विष्णुजी द्वारा मृत्यु उपरान्त देहदान करने का संकल्प बताता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन पूर्णतया लोकहित में था। डॉ० महीप सिंह ने उनके साथ कॉफी हाउस में बिताए दिनों को याद करते हुए कहा कि वे अभिव्यक्ति के अधिकार के प्रति सजग रहे और हम लोगों ने मिलकर एक संस्था भी वर्षों तक चलाई। साहित्य जगत् में विष्णुजी को विरोध सहना पड़ा और कई आलोचकों ने उनके साहित्य को अपेक्षित मान्यता नहीं दी। इसके बावजूद विष्णुजी ने निरन्तर सृजन कर एक से एक उत्कृष्ट रचनाएँ दीं, जिनमें 'आवारा मसीहा' शामिल है। डॉ० अशोक चक्रधर ने अपने आत्मीय संस्मरण प्रस्तुत किए। प्रसिद्ध नाट्यकार और कथाकार असग़र वजाहत ने कहा कि विष्णुजी का एक विशिष्ट व्यक्तित्व था, जिसमें हर आयु, वर्ग और विचारधाराओं से स्नेह एवं आत्मीयता थी।

केदारनाथ व नागार्जुन की जन्मशती

सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ० नामवर सिंह का कहना है कि कवि नागार्जुन गद्य में भी सिद्ध थे। उनके गद्य पर भी चर्चा होनी चाहिए, क्योंकि हिन्दी में ऐसे लेखक कम हैं, जो इतना सधा हुआ गद्य लिखते हैं।

पिछले दिनों दिल्ली में एनसीईआरटी के भाषा विभाग की ओर से केदारनाथ अग्रवाल और नागार्जुन की जन्मशती पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर बीज वक्तव्य में डॉ० सिंह ने कहा कि विषयवस्तु से लेकर रचना-विधान तक जितने प्रयोग नागार्जुन ने किए, वे अन्यत्र दुर्लभ हैं। जिन विषयों को दूसरे कवियों ने अछूत समझा, उन पर भी नागार्जुन ने खूब कलम चलाई। उन्होंने अपनी कविता में समाज के आखिरी आदमी को हीरो बनाया।

नागार्जुन की कविता पर चर्चा करते हुए डॉ० मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि उनकी कविता के बारह रंग यानी विषय हैं। जैसे—राजनीति, समाज, प्रकृति, संस्कृति, व्यंग्य, दलित, आदिवासी, स्त्री आदि। सही अर्थों में नागार्जुन ने जनतान्त्रिक काव्य की रचना की है। अवधेश प्रधान ने कहा कि नागार्जुन ने पारम्परिक छन्दों का अनुसरण करते हुए भी अपनी रचना में उन छन्दों को छुपा दिया है। उन्होंने अपनी कविता में वैदिक मन्त्र से लेकर लोकगीत तक के काव्य रूपों को अपनाया।

लोकरंग के कवि केदार की कविता पर चर्चा करते हुए विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि केदारनाथ अग्रवाल ने श्रम के सौन्दर्यबोध की अवधारणा को और अधिक समावेशी बनाया। उनकी कविता में फसल प्रकृति नहीं, बल्कि एक संस्कृति है। फसल जैसी प्रकृति का उदात्त और सुन्दर रूप अन्यत्र दुर्लभ है।

अरे यायावर रहेगा याद

जयपुर दूरदर्शन और पिछले दिनों डीडी भारती की ओर से अज्ञेय जन्म शताब्दी पर —अरे यायावर रहेगा याद कार्यक्रम हुआ। इसमें अशोक वाजपेयी, नंदकिशोर आचार्य और ओम थानवी ने अज्ञेय से जुड़े संस्मरणों और उनके साहित्य से जुड़े कई पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। इस परिसंवाद का संयोजन और संचालन नंद

भारद्वाज ने किया। इसके बाद हुए सत्र में अज्ञेय पर एक वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया और उस पर कवि कुबेर दत्त का व्याख्यान हुआ।

'......मैं था और मेरा आकाश' : डॉ० कन्हैयालाल नंदन

लोकसभा में प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि वरिष्ठ सम्पादक एवं लेखक कन्हैयालाल नंदन पारदर्शी, कठोर, सिद्धान्तप्रिय और सम्पादक की गरिमा को बनाए रखने वाले व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व का आकलन उनकी पुस्तक '......मैं था और मेरा आकाश' से किया जा सकता है। श्रीमती स्वराज ने पिछले दिनों दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में कन्हैयालाल नंदन की उक्त पुस्तक का लोकार्पण किया।

हिन्दी का प्रचार-प्रसार ब्रिटेन में

बर्मिंघम के एस्टन विश्वविद्यालय में आयोजित यूके क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन में यूरोप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार और खास तौर पर विदेशों में रहने वाले भारतीय विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाने में पेश आने वाली दिक्कतों पर तीन दिन तक विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। 24 से 26 जून, 2011 तक आयोजित इस सम्मेलन का उद्‌घाटन ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त नलिन सूरी ने किया।

इस अवसर पर सूरी ने कहा कि भारतीय संस्कृति से जोड़ने वाली और 42 करोड़ भारतीयों की मातृभाषा हिन्दी को किसी भी स्थिति में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हिन्दी शिक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि हमारी जिम्मेदारी यह भी है कि हम अपने संस्कार अगली पीढ़ी तक पहुँचाएँ और इसके लिए अपनी मातृभाषा और संस्कृति के प्रति सजग रहें।

सम्मेलन में 'हिन्दी की दशा और दिशा' पर अपने बीज वक्तव्य में वरिष्ठ आलोचक डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल ने कहा कि भाषा एक सांस्कृतिक पाठ है और हिन्दी सत्ता की नहीं, बल्कि जनांदोलनों की भाषा है। पालीवाल ने ब्रिटेन में हिन्दी पढ़ने वाले बच्चों के लिए ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करने पर जोर दिया जिसमें आधुनिक हिन्दी साहित्य पढ़ाया जा सके और जो देश के बारे में सही जानकारी दे। परमानन्द पांचाल ने देवनागरी लिपि के मानकीकरण और उससे जुड़ी नई जानकारियों से विदेशों में पढ़ने वाले बच्चों को अवगत कराए जाने पर जोर दिया।

'हिन्दी विश्व : गौरव ग्रन्थ' लोकार्पित

विगत माह भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली के सभागार में डॉ० राजेन्द्रनाथ मेहरोत्रा (ग्वालियर) द्वारा सम्पादित 'हिन्दी विश्व : गौरव ग्रन्थ' का लोकार्पण महानिदेशक श्री सुरेश गोयल, डॉ० वेदप्रताप वैदिक और डॉ० कमलकिशोर गोयनका ने किया। कार्यक्रम भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् एवं ग्वालियर की संस्था 'कर्मण्य तपोभूमि सेवा-न्यास' के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। डॉ० कमल किशोर गोयनका ने संयोजकत्व करते हुए आरम्भ में कहा कि भारत और भारतेतर देशों में फैले हिन्दी विश्व के हिन्दीसेवी, उसकी विकास-यात्रा एवं उपलब्धियों को यह ग्रन्थ सचित्र प्रस्तुत करता है।

इंटरनेट के दौर में पुस्तकें

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के हिन्दी विभाग तथा नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया द्वारा संयुक्त एकदिवसीय साहित्य उत्सव कार्यक्रम का आयोजन अमृतसर में किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कई नई पुस्तकों का लोकार्पण हुआ : 'हृदयेश : संकलित कहानियाँ', 'जैव-प्रौद्योगिकी' (पुरुषोत्तम चितले), 'पर्वत-पर्वत बस्ती-बस्ती' (चंडीप्रसाद भट्ट), 'पराया धन' (जनार्दन मिश्र), 'टापू वाला राक्षस' (राजेन्द्र यादव) तथा 'जय गंगे' (राजेन्द्र यादव)।

सत्र के अध्यक्ष प्रो० हरमोहिंदर सिंह बेदी ने लोकार्पण के उपरान्त कहा कि पुस्तक का अर्थ है ज्ञान, संस्कृति, इतिहास, हमारी विरासत और साहित्य। इंटरनेट पुस्तक का विकल्प नहीं हो सकता। राष्ट्र का विकास पुस्तक के साथ जुड़कर ही होता है। अशोक नीर ने कहा कि मानवीय संवेदनाओं को कमजोर करता है इंटरनेट जबकि किताब से आत्मीयता बनी रहती है।

साहित्यकार प्रेम विज के अनुसार पुस्तकों का स्थान इंटरनेट कभी नहीं ले सकता, यह सहायक की भूमिका जरूर निभा सकता है। पटियाला विश्वविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० सुखविंदर कौर बाठ का कथन है कि इंटरनेट एक अपरिचित दोस्त की भूमिका निभाता है जबकि पुस्तकें हमें पहचानी हुई-सी लगती हैं।

पहाड़ी चित्रकला एवं वास्तुकला विमोचित

कथाकार सुदर्शन वशिष्ठ द्वारा लिखित 'पहाड़ी चित्रकला एवं वास्तुकला' पुस्तक का विमोचन हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री प्रो० प्रेमकुमार धूमल द्वारा उनके आवास पर किया गया।

माननीय मुख्यमन्त्री ने लेखक के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी पुस्तकों की आज बहुत आवश्यकता है जो हमारी पुरातन और लुप्त हो रही कलाओं और वास्तुकला को सामने लाती हैं।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य विशेषांक

आचार्य श्रीराम शर्मा व्यक्ति की अद्‌भुत पहचान रखते थे। उन्होंने शान्ति, सद्‌भावना, जातीय व सामाजिक एकता के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। आज गायत्री परिवार का जो विस्तार है, वह उनके तपस्वी जीवन का ही प्रतिफल है। यह बात भारत माता मन्दिर के संस्थापक एवं निवर्तमान शंकराचार्य स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि ने कही।

बहुआयामी है डॉ० 'मानव' का साहित्य

हिसार में 'डॉ० रामनिवास 'मानव' का हिन्दी-साहित्य को योगदान' विषय पर आयोजित एक राष्ट्रीय साहित्य समारोह में, मानव-परिवार की दो दर्जन पुस्तकों के विमोचन के उपरान्त, मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ० मुक्ता मदान ने कहा कि डॉ० 'मानव' का बहुआयामी विपुल साहित्य दूसरे साहित्यकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

समारोह के अध्यक्ष राज्यकवि उदयभानु 'हंस' ने कहा कि यह गर्व की बात है कि हमारे बीच एक ऐसा साहित्यकार है, जिसने देश और दुनिया में हिसार का नाम गौरवान्वित किया है। डॉ० 'मानव' ने अपनी रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट किया तथा युगीन यथार्थ और जीवन-संघर्ष को अपने सृजन की प्रेरणा बताया।

प्रो० वि० वेंकटाचलम् पुण्यस्मरण

उज्जैन, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश) में दिनांक 7 जून 2011 को सद्य: स्थापित प्रो० वि० वेंकटाचलम् शोधपीठ के प्रथम आयोजन को प्रो० वि० वेंकटाचलम् पुण्यस्मरण के रूप में मनाया गया। पद्मश्री सम्मानित प्रो० वि० वेंकटाचलम् संस्कृत साहित्य तथा वेदान्त के परिणिष्ठित विद्वान् थे, जिन्होंने 6 वर्ष (दो कार्यकाल) तक काशी के प्रसिद्ध सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति पद को सफलतापूर्वक सुशोभित किया था। इससे पूर्व मध्यप्रदेश तथा उज्जयिनी में लगभग 35 वर्ष तक उन्होंने आचार्य के रूप में संस्कृत और संस्कृत अनुरागियों की सेवा की।

केदार ने किसान को उसकी विविधता व सम्पूर्णता में देखा था

बाँदा, दिनांक 22 जून 2011 को जनकवि केदारनाथ अग्रवाल की ग्यारहवीं पुण्यतिथि को 'केदार शोध पीठ न्यास' बाँदा के तत्वावधान में प्रगतिशील लेखक संघ बाँदा इकाई द्वारा बृहद आयोजन किया गया।

इस पुण्यतिथि के आयोजन में प्रलेस इकाई के अध्यक्ष चन्द्रपाल कश्यप ने कहा जिस प्रकार वर्तमान राजनीति ने किसानों और मजदूरों से आँखें फेर ली हैं उसी प्रकार रचनाकारों के व्यापक समूह ने इधर ध्यान देना कम कर दिया है। ऐसे वातावरण में जनकवियों का समय पर मूल्यांकन न होना स्वाभाविक है। सातवें दशक में किसानों एवं मजदूरों के जनान्दोलनों के कारण ही केदारनाथ अग्रवाल का मूल्यांकन हो सका था। केदार शोध पीठ न्यास के सचिव नरेन्द्र पुण्डरीक ने कहा कथा में प्रेमचंद ने गाँव को सम्पूर्णता प्रदान की और कविता में केदार के यहाँ गाँव और किसान अपने सम्पूर्ण रूप में उपस्थित है।

पुस्तक परिचय

बनारस के यशस्वी पत्रकार

शोध एवं सम्पादन
बच्चन सिंह
डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 160

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-812-4
अजि. : रु० 125.00 ISBN : 978-81-7124-813-1
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी पत्रकारिता की जन्मभूमि भले कलकत्ता रही हो लेकिन कर्मभूमि तो बनारस ही है। स्वनामधन्य पत्रकारों ने अपनी विलक्षण प्रतिभा और विकट साधना से पत्रकारिता को इतनी ऊँचाई और गहनता दी कि 'बनारस स्कूल ऑफ जर्नलिज़्म' नाम से एक नई धारा ही फूट पड़ी। बनारस हिन्दी पत्रकारिता का गढ़ बन गया। बनारस की पत्रकारिता को भारतीय स्तर पर मान्यता और सराहना मिली। पहचान मिली। समृद्धि मिली। शब्द मिले। शैली मिली। हिन्दी भाषा के विकास का मार्ग प्रशस्त किया बनारस की पत्रकारिता ने। इसका सबसे बड़ा श्रेय बाबूराव विष्णु पराड़कर और 'आज' को जाता है। लोग हिन्दी सीखने के लिए 'आज' पढ़ते थे। इस समाचार-पत्र ने आजादी के पहले स्वतन्त्रता संग्राम में अद्‌भुत योगदान दिया और आजादी के बाद देश के निर्माण में। देश के निर्माताओं पर बारीक नजर रखने का काम किया। जनता को जागरूक बनाया। अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत किया।

'आज' के अलावा भी कई पत्र-पत्रिकाएँ निकलीं और हिन्दी पत्रकारिता में नवीन चेतना का संचार करती रहीं। सभी ने अपने-अपने ढंग से हिन्दी और हिन्दी पत्रकारिता को सजाया-सँवारा तथा गति दी। बनारस की पत्रकारिता के लम्बे सफर में अनेक ऐसे कर्मठ मनीषी हुए हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन ही होम कर दिया।

इस पुस्तक में उन तपस्वी पत्रकारों की झलक देने की कोशिश की गई है जिन्हें जाने और समझे बिना हिन्दी पत्रकारिता का अध्ययन अधूरा रहेगा। पत्रकारिता के विकास के इतिहास की कड़ियाँ जुड़ नहीं पाएँगी और हम जान नहीं पाएँगे कि किस तरह तमाम पत्रकारों ने अपने आपको तपाया है। पत्रकारिता उनके लिए कुछ पाने का साधन नहीं थी, लगातार खोते जाने की साधना थी।

साधन-पथ

पद्मविभूषण
महामहोपाध्याय
डॉ० पं० गोपीनाथ
कविराज

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 156

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-800-1
अजि. : रु० 90.00 ISBN : 978-81-7124-801-8
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रात:स्मरणीय महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराजजी के उपदेश-वाक्यों तथा लेखों के अनुवाद का यह संग्रह एक प्रकार से भले ही क्रमबद्ध रूप से विषय की आलोचना का रूप न ले सके, तथापि इसकी प्रत्येक पंक्ति में अगम पथ का सन्धान मिलता रहता है। यहाँ पथ का तात्पर्य आन्तरिक पथ है। बाह्य पथ यह संसार है। आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से इस विशाल पृथ्वी का प्रसार हम नाप लेते हैं। उसकी परिक्रमा अनायास कर लेते हैं। वह सब एक पथ का आश्रय लेने से होता है। परन्तु अन्तर्जगत् जो हमारे अस्तित्व में स्थित है, वह भले ही इस साढ़े तीन हाथ की देह का जगत् हो, वह आज भी हमारे लिए अज्ञात है। क्योंकि उसमें प्रवेश करने का कोई पथ खोजे भी नहीं मिलता। हजारों-हजारों किलोमीटर की इस भूमण्डल की परिक्रमा उतनी कठिन नहीं है, जितना कठिन है इस अन्तर्जगत् के पथ पर एक बिन्दु भी अग्रसर हो सकना! हम बाह्य जगत् में गुरुत्वाकर्षण तथा वायुमण्डल के अवरोध को पार करते हुए उसमें भले ही आगे बढ़ते चले जाते हैं, परन्तु अन्तर्जगत् के मध्याकर्षण से पार पा सकना विज्ञान के लिए भी दु:ष्कर है।'बलादाकृष्य मोहाय' मोहरूपी मध्याकर्षण बलात् आकृष्ट करके हमें पथ के आरम्भ में ही पटक देता है। हम इस दुरन्त अवरोध से, मध्याकर्षण से छुटकारा पाये बिना अन्तर्जगत् में कैसे अग्रसर हो सकते हैं ? अत: इसके लिए पहले साधन के नेत्र पाना होगा, मध्याकर्षण से मुक्ति का उपाय पाना होगा, तभी हम कालान्तर में अन्तर्जगत् के अज्ञात पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

इस ग्रन्थ में ऐसा ही कुछ दिशा-निर्देश है। पहले साधनपथ पर चलना तदनन्तर अन्त:पथ ढूँढ़ना। अथवा कृपा पाकर दोनों पर ही युगपत रूप से एक साथ भी चालन हो सकता है। इसका स्वरूप कृपा सापेक्ष है। गुरुकृपा, भगवत्कृपा तथा शास्त्रकृपा! भगवत्कृपा का कोई नियम नहीं है वह अहेतुकी है। गुरुकृपा आज के परिवेश में और भी दुष्कर हो गई है। सद्‌गुरु का पता नहीं चलता, वैसे तो गुरु नगर-नगर, गली-गली भरे पड़े हैं! त्रेता, द्वापर तथा सत्ययुग में भी इतने गुरु नहीं रहे होंगे! परन्तु सद्‌गुरु... ? अन्त में बचती है शास्त्रकृपा। सत्शास्त्र वह है जिसे स्वानुभूति से लिखा, बताया, सुनाया गया हो। केवल शब्दों का जाल न हो। जिसमें 'आँखिन की देखी' बात हो। इस सन्दर्भ में पूज्य कविराजजी की वाणी पर किसे सन्देह हो सकता है ?

यह 'साधनपथ' तथा इसमें प्रतिपाद्य प्रत्येक विषय प्रत्यक्ष पर आधारित हैं। स्वानुभूत सत्य हैं। अत: शास्त्र हैं। इसलिए इसके अनुशीलन अध्ययन से शास्त्रकृपा प्राप्त हो जाती है। जो इस अनुभूति-सागर में जितना गोता लगा सकेगा, वह उतने ही रत्न का, कृपारूपी मुक्ता का आहरण कर सकेगा। यह नि:सन्दिग्ध है।

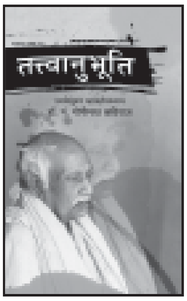

तत्त्वानुभूति

पद्मविभूषण
महामहोपाध्याय
डॉ० पं० गोपीनाथ
कविराज

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 164

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-814-8
अजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-815-5
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रात:स्मरणीय महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराजजी की साधनोज्वल प्रज्ञा में जिस तत्त्वानुभूति का प्रतिफलन हुआ था, यह उसी का संकलन है। तत्त्व से यहाँ षट्‌त्रिंश तत्त्व किंवा पंचतत्त्वादि का तात्पर्यार्थ नहीं है। यहाँ तत्त्व का अर्थ प्राणब्रह्म, आत्मब्रह्म, परब्रह्मरूप सत्ता है, जो तत्त्वातीत होकर भी सर्वतत्त्वमय है। इनका तत्त्वातीत रूप मन-वाणी-अनुभूति, सबसे परे है। जीवदशा में इनके इस रूप की अनुभूति कर सकना भी असम्भव है, यहाँ तक की इनकी धारणा भी इस देहयन्त्र से कोई कैसे कर सकता है ? तथापि महापुरुष के अन्त:चक्षु इनके तत्त्वमय स्वरूप की अनुभूति कर ही लेते हैं, यही है परमतत्त्व की अनुग्रहरूप कृपा। स्वप्रयत्न से कोई भी इस तत्त्वानुभूति का अधिकारी नहीं हो सकता। यह कृपा-सापेक्ष है।

यह अनुग्रहानुभूति सामान्य जन के लिए दुष्प्राप्य है। इस अनुभूति प्रभा को धारण करने योग्य जिस चित्तफलक की आवश्यकता है, वह पाकर भी मनुष्य उस पर संश्लिष्ट कल्मष का मार्जन नहीं कर सका है। ऐसी स्थिति में महापुरुष की तत्त्वानुभूतिपूर्ण वाङ्मयी त्रिपथगा में, ज्ञान-भक्ति-कर्म की अन्त:सलिला में निमज्जन करके जिज्ञासुवर्ग अवश्य कृतार्थ होगा और उसके इस स्नान से स्वच्छ-धौत-निष्कल्मष चित्तफलक पर किंचित् परिमाण में वह अनुभूति अवश्य प्रतिच्छवित हो सकेगी, यह विश्वास करता हूँ।

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव

जीवन और दर्शन

नन्दलाल गुप्त

षष्ठ संस्करण : 2011 ई०
पृष्ठ : 324 + 12 पृ० चित्र

अजि. : रु० 180.00 ISBN : 978-81-7124-640-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सूर्यविज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव एक आदर्श योगी, ज्ञानी, भक्त तथा सत्य-संकल्प महात्मा थे। परमपथ के इस प्रदर्शक ने 'योग' तथा 'विज्ञान' दोनों ही विषयों में परमोच्च स्थिति प्राप्त कर ली थी। शास्त्रों के गुह्यतम रहस्यों को वे अपनी अचिन्त्य विभूति के बल से, योग्य अधिकारियों को प्रत्यक्ष प्रदर्शित करके समझाने तथा उनके सन्देहों का समाधान करने में पूर्णरूपेण समर्थ थे। इस प्रकार से उनका जीवन अलौकिक था।

ऐसे सिद्ध महापुरुष की जीवनी प्रस्तुत करना सहज नहीं है। गुरुदेव के श्रीचरणों में बैठने का तथा उनकी कृपा का कतिपय सौभाग्य तथा अन्य गुरुभाइयों और भक्तों से गुरु-विषयक वार्त्तालाप का सौजन्य लेखक को अवश्य प्राप्त हुआ है। गुरुदेव के सान्निध्य, उनकी कृपा एवं शिष्यों तथा भक्तों के संस्मरणों से प्रेरित होकर, हिन्दी भाषा-प्रेमियों की गुरुदेव के विषय में जानने की उत्कण्ठा की पूर्ति के हेतु, लेखक ने गुरुदेव की यह जीवनी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह क्रमबद्ध न होकर उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का एक संग्रहमात्र है जो उनकी अलौकिक शक्तियों तथा उनके उपदेशों का अल्प-सा परिचय प्रस्तुत करती है।

इन महापुरुष को अनेक योग-सिद्धियाँ प्राप्त थीं जिससे प्रकृति, काल और स्थान सब उनकी इच्छा-शक्ति के अनुचर थे। साथ-ही-साथ 'विज्ञान' की भूमि में भी इनकी उपलब्धि इतनी असाधारण थी कि सूर्य की उपयुक्त रश्मियों को आतिशी शीशे द्वारा रुई आदि पर संकेन्द्रित करके वे मनोवांछित धातुओं, मणियों तथा अन्य पदार्थों का सृजन तथा एक वस्तु को दूसरी में परिवर्तित भी कर देते थे।

काशी के मलदहिया मुहल्ले में उन्होंने 'विशुद्धानन्द कानन आश्रम' स्थापित किया जो अनेक वर्षों तक उनकी लीलाओं का कर्म-स्थल रहा। वहाँ आज भी उनके द्वारा स्थापित प्रसिद्ध 'नवमुण्डी सिद्धासन' तथा संगमरमर की प्रतिमा के रूप में उनकी स्मृति सुरक्षित है।

हिन्दी का गद्य-साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पुनमुर्द्रण : 2011 ई०
पृष्ठ : 968

सजि. : रु० 800.00 ISBN : 978-81-7124-702-8
अजि. : रु० 550.00 ISBN : 978-81-7124-703-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

- हिन्दी गद्य-साहित्य का समग्र और व्यवस्थित अध्ययन।
- सभी स्तरों पर नवीनतम सामग्री का समावेश।
- अवधारणाओं के विकास और सामाजिक सन्दर्भों के बदलाव की द्वन्द्वात्मक स्थिति का विवेचन।
- नवीनतम गद्य-विधाओं का विशद विवेचन।
- वैचारिक अन्तर्धाराओं के सकारात्मक पक्ष पर बल।
- उनतीस गद्य लेखकों का सारगर्भित, सन्तुलित और आग्रह-मुक्त विवेचन।

"यह हिन्दी के गद्य-साहित्य का प्रामाणिक दस्तावेज है। समग्रता और सघनता दोनों दृष्टियों से यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। समग्रता का आलम यह है कि लेखक ने भारतेन्दु पूर्व से लेकर आज तक के हिन्दी गद्य के विकासमान स्वरूप की प्रामाणिक पहचान प्रस्तुत की है तथा हर विधा में लिखी गयी सभी महत्त्वपूर्ण रचनाओं और पुस्तकों का लेखा-जोखा एवं आकलन प्रस्तुत किया है। यहाँ तक कि पत्र-पत्रिकाओं का भी संक्षिप्त किन्तु प्राय: समग्र परिचय दिया है। यह पुस्तक गद्य-साहित्य का इतिहास भी है और मूल्यांकन भी। इतिहास है, इसलिए गद्य-भाषा और उसमें लिखी जा रही विविध साहित्य विधाओं के क्रमिक विकास की स्पष्ट और प्रामाणिक पहचान उभरती है। इस प्रक्रिया में लेखक ने विविध साहित्यांदोलनों और वादों की मूल प्रकृति का विश्लेषण किया है। मूल्यांकन भी है। अत: लेखक ने विविध लेखकों और उनकी कृतियों का विशेषत: प्रमुख कृतियों का बहुत थोड़े में किन्तु सारभूत रूप में विश्लेषण और मूल्यांकन किया है।" **—डॉ० रामदरश मिश्र**

968 पृष्ठों में विस्तृत यह ग्रन्थ हिन्दी गद्य साहित्य का कोश है। हिन्दी गद्य साहित्य के सम्बन्ध में पूर्ण नवीनतम और प्रामाणिक जानकारी देनेवाली यह अकेली पुस्तक है। इस ग्रन्थ में विविध अध्यायों के अन्तर्गत हिन्दी गद्य साहित्य के विकास, विविध विधाओं तथा प्रमुख गद्यकारों पर महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गयी है।

हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास

डॉ० लाल साहब सिंह

पंचम संस्करण : 2011 ई०
पृष्ठ : 240

अजि. : रु० 70.00 ISBN : 978-81-7124-654-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों की परम्परा-प्राप्त कोई सुदृढ़ पृष्ठभूमि नहीं है। नवीन इतिहास लेखक को कोई ऐसा प्राचीन इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, जिसमें उसके लेखक ने अपने काल के पूर्ववर्ती सम्पूर्ण साहित्य का वैज्ञानिक सर्वेक्षण प्रस्तुत कर दिया हो, जिससे उसकी रिक्थ पर परवर्ती लेखक को केवल पूर्ववर्ती इतिहासकार के अनन्तर विकसित वाङ्मय का ही मूल्यांकन करना शेष हो। फलत: नवीन साहित्य-इतिहास लेखक अपना काम आरम्भिक युग से ही आरम्भ करने को बाध्य है। इसी सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास लिखने का प्रयास किया गया है। इतना स्पष्ट है कि अपनी अनेक विसंगतियों के बावजूद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास अब भी ऐसा प्रकाशपुंज है, जो साहित्येतिहास लेखकों का मार्गदर्शन कर रहा है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन, नामकरण और मूल्यांकन के सम्बन्ध में विद्वानों में मत-वैभिन्य है। डॉ० बच्चन सिंह का मत है कि "वास्तविकता तो यह है कि एक ही कालावधि में अनेक प्रकार की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ होती हैं। उनसे या तो सह-अस्तित्व होता है या टकराहट होती है।" काल-विभाजन मात्र सुविधा होता है। इतिहास-लेखक एक कालावधि को एक शीर्षक से बाँध देता है, इस दृष्टि से मैंने उद्‌भव कालीन साहित्य को आदि-काल की संज्ञा से अभिहित किया है। इस काल में वीरगाथात्मक, शृंगारपरक, लौकिक-धार्मिक आदि अनेक प्रकार का साहित्य लिखा गया है। प्रथम अध्याय में इसका सम्यक् विश्लेषण किया गया है।

भक्तिकाल के नामकरण पर कोई मतभेद नहीं है। डॉ० बच्चन सिंह का कहना है कि 'भक्तिकाल भक्तिकाल है, मध्यकाल नहीं। मध्यकाल सामान्यत: जकड़ी हुई मनोवृत्ति का परिचायक है।' इस काल में सगुण-निर्गुण नामक दो धाराओं में प्रचुर साहित्य लिखा गया है।

रीतिकाल वस्तु, शैली, छंद, रस आदि की दृष्टि से अपने आप में एक स्वतंत्र काल है। इस काल में शृंगार के अतिरिक्त भक्ति, नीति और

वीरता सम्बन्धी साहित्य भी पर्याप्त मात्रा में लिखा गया है। इस युग में रचे गये साहित्य का समुचित मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया गया है।

आधुनिक काल के गत्यात्मक परिवर्तनों के कारण इसे छोटे-छोटे युगों में विभाजित किया गया है, जैसे—भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवाद युग आदि। इन युगों की विशेषताओं को नये-नये प्रत्ययों के सन्दर्भों में परखने का प्रयास किया गया है। आशा है हिन्दी साहित्य के पाठकों के लिये यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

हिन्दी कहानी

सं० : डॉ० उर्मिला मिश्र

प्रथम संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 148

अजि. : रु० 40.00 ISBN : 978-81-7124-824-7

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यह संग्रह प्रेमचंद और उनके समकालीनों के बाद भाषा, शिल्प और बोध की दृष्टि से पूर्णतया परिवर्तित अज्ञेय को मानता है। अत: प्रेमचंद, प्रसाद तथा अज्ञेय के बाद के कहानीकारों की कहानियाँ संग्रहीत की गई हैं। ये कहानीकार आधुनिकतावादी-अस्तित्ववादी और अनुभवपरक प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति देते हैं।

हिन्दी संसार में दलित लेखन की इधर चर्चा रही। दलित लेखकों ने कविताएँ, कथायें और आत्मकथायें लिखी हैं। इनका लेखन सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य में जाति-व्यवस्था के विरुद्ध अत्यन्त ही विद्रोही होकर उभड़ा है। इस धारा के संग्रहीत कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार—''दलित साहित्य में अनुभवों से उत्पन्न आशय निष्ठा ही अधिक है। पारम्परिक साहित्य ने जिसे त्याज्य और निषिद्ध माना है, दलित साहित्य ने उसे अपने अनुभवों के आधार पर प्रमुखता दी है।'' संकलित कहानी के साथ उनका वक्तव्य द्रष्टव्य है—

''दहकते रक्त को सुन्न कर देने वाली यातनाएँ, जो इतिहास नहीं बन सकीं—वे व्यथा-कथायें हैं। जिन्दा रहने और जीवन सरोकारों से जूझते पात्र कटु सच्चाई हैं, जिन्हें कहानी में दर्ज करने की कोशिश की है।''

कुल मिलाकर संग्रहीत सभी कहानियाँ मनुष्य और समाज के आस-पास की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देती हैं और प्रेमचंद और उनके युग के बाद की कहानियों का जिन्हें समकालीन साहित्य कहा जा सकता है, उनका रूपांकन प्रस्तुत करती हैं।

प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

डॉ० (सुश्री) शरद सिंह

द्वितीय संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 348 + 12 पृ० चित्र

सजि. : रु० 280.00 ISBN : 978-81-7124-592-5

अजि. : रु० 180.00 ISBN : 978-81-7124-593-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के लिए उसके प्रत्येक पक्ष को जानना आवश्यक है। किसी भी देश का राजनीतिक इतिहास ही उसका सम्पूर्ण इतिहास नहीं होता है अपितु देश के निर्माण एवं विकास में उस देश का सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत: इस पुस्तक में प्राचीन भारत के सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास को प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पुस्तक की समूची विषय-वस्तु को दो खण्ड में विभक्त कर दिया गया है।

प्रथम खण्ड में प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास है। इसके अन्तर्गत प्रथम अध्याय में प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के साधनों पर प्रकाश डाला गया है। इस खण्ड में भारतीय समाज की लगभग उन सभी दशाओं एवं तत्त्वों को रखा गया है जिन्होंने भारतीय समाज को प्रभावित किया। द्वितीय अध्याय में इतिहास और समाज के पारस्परिक सम्बन्ध की विवेचना की गई है। तीसरे अध्याय में प्राचीन भारत में समाज एवं परिवार के स्वरूप तथा चौथे अध्याय में वर्ण-व्यवस्था एवं जाति-प्रथा का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। पाँचवें अध्याय में दास-प्रथा, छठें अध्याय में स्त्रियों की स्थिति, सातवें अध्याय में शूद्रों की स्थिति एवं अस्पृश्यता की प्रथा पर प्रकाश डाला गया है। आठवें अध्याय में संस्कारों की व्याख्या की गई है तथा नवें अध्याय में प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति को प्रस्तुत किया गया है। दसवें अध्याय में प्राचीन भारत के सामाजिक जीवन में नैतिकता पर प्रकाश डाला गया है। ग्यारहवें अध्याय में प्राचीन भारत में आहार-विहार से सम्बन्धित गतिविधियों एवं क्रियाकलापों पर प्रकाश डाला गया है तथा प्रथम खण्ड के अन्तिम अध्याय अर्थात् बारहवें अध्याय में तत्कालीन कला के तत्त्वों एवं सौन्दर्य की अवधारणा को विवेचित किया गया है।

द्वितीय खण्ड में प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास है। इस खण्ड के प्रथम अध्याय में इतिहास एवं अर्थशास्त्र के पारस्परिक सम्बन्ध को प्रस्तुत किया गया है। चूँकि भारत आरम्भ से ही एक कृषि-प्रधान देश रहा है तथा इसकी आर्थिक सुदृढ़ता में भूमि का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है अत: द्वितीय अध्याय के रूप में प्राचीन भारत में भूमि-व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय में कृषि, वन एवं पशुपालन, चौथे अध्याय में राजस्व-व्यवस्था तथा पाँचवें अध्याय में मुद्रा एवं विनिमय के सम्बन्ध में विवरण दिया गया है। प्राचीन भारत की आर्थिक प्रणाली में श्रेणी तथा निगमों का उल्लेखनीय महत्त्व रहा है। छठें अध्याय में इन्हीं श्रेणी एवं निगमों का तथा सातवें अध्याय में साहूकारी तथा ऋण-व्यवस्था का विवरण दिया गया है।

प्राचीन काल से ही भारत का व्यापारिक सम्बन्ध विभिन्न देशों से रहा है। प्राचीन भारत में विदेश व्यापार भू-मार्ग, समुद्री-मार्ग तथा नदियों के मार्ग से किया जाता था। भारतीय मसालों, वस्त्रों तथा इत्र आदि का निर्यात किया जाता था तथा विदेशों से रेशम एवं उत्तम नस्ल के घोड़े आदि आयात किए जाते थे। आठवें अध्याय में प्राचीन भारत के व्यापार-वाणिज्य पर प्रकाश डालते हुए तत्कालीन भारत की आंतरिक एवं विदेश व्यापार के सम्बन्ध में जानकारी प्रस्तुत की गई है। द्वितीय खण्ड के अन्तिम अध्याय में वस्त्र उद्योग, धातुकर्म, तेल उद्योग, हाथी दाँत उद्योग, शिल्प एवं उद्योग के विकास का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

आज उपभोक्ता संरक्षण एवं पर्यावरण को ले कर जिस प्रकार चिन्ता का वातावरण है तथा इन दोनों के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया जा रहा है उसे देखते हुए संक्षेप में सुधी पाठकों को यह स्मरण दिलाने का प्रयास किया गया है कि प्राचीन भारत में उपभोक्ता संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति असीम जागरूकता थी। अत: इन दोनों विषयों पर दो लघु टिप्पणियाँ परिशिष्ट के रूप में समाहित हैं।

इसके साथ ही परिशिष्ट के अन्तर्गत पुस्तक के विषय पर आधारित कुछ चित्र तथा मानचित्र भी सम्मिलित किए गए हैं।

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

श्रीराम गोयल

एकादश संस्क० : 2011 ई०

पृष्ठ : 484

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-582-6

अजि. : रु० 175.00 ISBN : 978-81-7124-583-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

स्मृति-शेष

बादल सरकार : एक युग का अवसान

भारतीय रंगमंच के क्रान्तिकारी जनपक्षधर, बांग्ला भाषा के प्रबुद्ध नाटककार, अनूठे रंगकर्मी बादल सरकार का निधन 13 मई 2011 को कोलकाता में हो गया। वह 85 वर्ष के थे।

बादल सरकार ने मूलत: व्यवस्था विरोधी नाटक लिखे और उन्हें पूरी कलात्मकता के साथ मंचित किया। 1970 के दशक में नक्सलवाद को केन्द्र में रख कर उन्होंने बहुत सी बेबाक प्रस्तुतियाँ सामने रखीं।

1972 में बादल सरकार को भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया। 1977 में संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें रत्न सदस्य का मान देते हुए फेलोशिप प्रदान की। उन्होंने अपनी लेखनी से कई कालजयी नाटकों को जन्म दिया जिनमें से कुछ प्रमुख हैं—जुलूस, बाकी इतिहास, भीमा, सारी रात, सालूशन एक्ट, अन्त नहीं आदि।

असमी साहित्यकार चलीहा का स्वर्गवास

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध असमी साहित्याकर सौरव कुमार चलीहा का लम्बी बीमारी के बाद पिछले महीने गुवाहाटी में निधन हो गया। वे 81 साल के थे।

चलीहा का असली नाम सुरेन्द्रनाथ मेधी था। वे सौरव कुमार चलीहा के नाम से साहित्य रचना करते थे। उन्हें कहानी-संग्रह 'गोलम' के लिए वर्ष 1974 में साहित्य आकादेमी सम्मान से सम्मानित किया गया था। उनकी कई कहानियों का अंग्रेजी, बांग्ला, हिन्दी, तेलुगु और मलयालम में अनुवाद किया गया है। असम के मुख्यमन्त्री तरुण गोगोई ने उनके निधन पर कहा कि असम के साहित्यिक जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है।

पंजाबी कहानीकार का निधन

पंजाबी के प्रसिद्ध कहानीकार जसवंत सिंह विरदी का पिछले दिनों निधन हो गया। वह 75 वर्ष के थे। हिन्दी पाठकों के मध्य पर्याप्त लोकप्रिय रहे विरदी पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे।

अनवर फर्रुखाबादी नहीं रहे

'जिन्दगी भर नहीं भूलेगी बरसात की रात' और 'हमें तो लूट लिया मिल के हुस्नवालों ने' जैसी लोकप्रिय रचनाओं के मशहूर शायर अनवर फर्रुखाबादी का पिछले माह फर्रुखाबाद में निधन हो गया। वे 82 वर्ष के थे।

मोहम्मद रफी, मन्ना डे, पंकज उधास, शंकर-शम्भू और शबीर बन्धुओं जैसे मशहूर गायकों के स्वर में अपने पीछे लगभग दो हजार गीत, गज़ल, कव्वाली और गाने छोड़ गए मशहूर शायर, 1928 में जन्मे अनवर 1945 में मुंबई पहुँचे और वहाँ चालीस साल के प्रवास के दौरान अलहिलाल, मेरे पिया, परदेशी, साजन जैसी अनेक मशहूर फिल्मों और एलबमों के लिए उन्होंने गीत, गाने और कव्वालियाँ लिखीं।

डॉ० हर्षनंदिनी भाटिया नहीं रहीं

ब्रजकला विदुषी डॉ० हर्षनंदिनी भाटिया का जन्म 28 जून 1930 को हाथरस जिले में हुआ था तथा उनका देहान्त 8 जून 2011 को उनके निज निवास पर हुआ। डॉ० हर्षनंदिनी भाटिया अस्वस्थ होते हुए भी जीवन के अन्तिम समय तक निरन्तर ब्रज लोक कला से जुड़ी रहीं। डॉ० हर्षनंदिनी भाटिया ने 'नारी शृंगार' (बिहार सरकार द्वारा पुरस्कृत), 'सांस्कृतिक शब्दावली', 'ब्रज-पर्यावरण-पुष्पश्री', 'ब्रजनिधि-वनश्री', 'ब्रज-लोकगीत', 'ब्रज संस्कृति और साहित्य', 'आस्था के सुमन', 'साहित्यकार महादेवी', 'यश सुरभि-चहु ओर' आदि पुस्तकों का लेखन किया था।

पं० अरुण शर्मा का निधन

वाराणसी, योगतन्त्र के प्रख्यात विद्वान एवं आगम निगम संस्थान, अवधगर्वी के संस्थापक पं० अरुण कुमार शर्मा का बुधवार 29 जून की रात्रि 11.30 बजे निधन हो गया। वह 86 वर्ष के थे। आपने 'मारण पात्र', 'कुंडलिनी शक्ति', 'परलोक विज्ञान', 'मरणोत्तर जीवन का रहस्य', 'तीसरा नेत्र', 'कारण पात्र', 'अभौतिक सत्ता में प्रवेश', 'आवाहन' आदि दर्जनों पुस्तकों का लेखन किया। श्री शर्मा को वर्ष 1999 में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान और 2001 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से सम्मानित भी किया गया।

कथाकार साजिद रशिद का निधन

जाने माने कथाकार साजिद रशिद का 11 जुलाई 2011 को असामयिक निधन हो गया।

संगीत गुरु मधुकरजी नहीं रहे

अजमेर, सैकड़ों संगीत अध्येताओं को शास्त्रीय संगीत में पारंगत करने वाले सुप्रसिद्ध संगीत गुरु कन्हैयालाल मधुकर का शुक्रवार 20 जुलाई की सुबह निधन हो गया। वे लगभग 80 वर्ष के थे। मधुकरजी न सिर्फ उच्च कोटि के संगीतज्ञ बल्कि ख्यातनाम रचनाकार भी थे।

उनके लिखे सैकड़ों गीत एवं भजन देश भर के गायकों द्वारा गाये जाते रहे हैं। ग्वालियर घराने के स्व० श्री गोविन्दराव राजुरकर के शिष्य रहे मधुकर, वर्षों तक अजमेर म्यूजिक कालेज के प्राचार्य रहे। इन्होंने ही अजमेर संगीत कला केन्द्र की नींव रखी। मधुकरजी ने नाद ज्योति नाम से संगीत पत्रिका का भी प्रकाशन किया जिसे बीबीसी लंदन ने किसी नेत्रहीन द्वारा सम्पादित विश्व की पहली पत्रिका बताया था।

उन्होंने श्री राम गीतिका के नाम से ऐसे सांगीतिक महाग्रन्थ की रचना की जिसमें श्रीरामकथा पर आधारित भजनों को स्वरलिपिबद्ध भी किया गया। पाँच हजार से अधिक सांगीतिक रचनाएँ करने वाले मधुकरजी ने स्वरांजलि, गायन भक्ति पारिजात, राम सुयश तरंगिनी एवं अन्तर्वीणा के नाम से कुछ और ग्रन्थों की भी रचना की।

आपको राजस्थान संगीत अकादमी जोधपुर के स्वर्ण जयंती समारोह पर सम्मानित किया गया था।

रूक्माजी नहीं रहे

2-12-1926 को कौल बाजार, वल्लारी, कर्नाटक प्रान्त में जन्मे, हिन्दी-मराठी-तेलुगु-तमिल-अंग्रेजी भाषाओं के जानकार रूक्माजी का 8-6-2011 को आन्ध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में निधन हो गया।

रूक्माजी 'अमर' स्वतन्त्रता सेनानी, गाँधीवादी, हिन्दी प्रचारक, समीक्षक, आलोचक, लेखक, कवि थे। उन्होंने नया सूरज, तनहाई में आदि अनेकों पुस्तकों का सृजन किया।

दार्शनिक विद्वान गोविंद चंद्र पाण्डे नहीं रहे

22 मई को प्रसिद्ध दार्शनिक और इतिहासकार श्री गोविंद चंद्र पाण्डे का नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे। प्रो० पाण्डे मूलत: इतिहास के विद्वान् थे। इतिहास, दर्शन और साहित्य में गहरा अध्ययन होने के साथ वे संस्कृत के विद्वान् और कई भाषाओं के जानकार थे। साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री गोविंद चंद्र पाण्डे इलाहाबाद और राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 'बौद्ध धर्म का इतिहास', 'भारतीय परम्परा के मूल स्वर' और 'मूल मीमांसा' उनके महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। उन्हें सरस्वती सम्मान, मूर्तिदेवी पुरस्कार प्रदान किए गए।

कलाकार देवीप्रसाद नहीं रहे

2 जून को सुपरिचित कलाकार और शिक्षाविद् श्री देवी प्रसाद का नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 90 वर्ष के थे। उन्हें 2007 में 'ललित कला रत्न सम्मान' और 2008 में विश्व भारती से 'देशिकोत्तम' (डी०लिट०) की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। उनकी 20 पुस्तकें और 100 से भी अधिक लेख प्रकाशित हैं।

मकबूल फ़िदा हुसेन

आधुनिक भारतीय चित्रकला के प्रवर्तकों में मुकाम हासिल करने वाले हुसेन नहीं रहे। लंदन-स्थित विशेष कब्रिस्तान में उन्हें दफन किया गया।

नाटककार जनार्दन राय का निधन

विगत दिनों बिहार के प्रसिद्ध नाटककार जनार्दन राय जी का निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे। उनका रेडियो पर प्रसारित होने वाला धारावाहिक नाटक 'घर परिवार' काफी चर्चित रहा। 'बहुरूपिया' और 'एक और सूर्यास्त' नाटक के अतिरिक्त उन्होंने कई कविताएँ व उपन्यास भी लिखे जिनमें से प्रमुख हैं एकलव्य, एक नाम चाहिए, चमत्कार, काली लड़की आदि।

भारतीय वाङ्मय परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

बुन्देलखण्ड की प्राचीनता, महामहोपाध्याय डॉ० वागीश शास्त्री, प्रकाशक : सचिव, वाग्योग चेतनापीठम्, बी० 3/131 ए शिवाला, वाराणसी–221 001, संस्करण : द्वितीय, मूल्य 200/–रु० मात्र।

× × × विद्वान लेखक ने गम्भीर अध्यवसाय द्वारा इस अनुसंधान परक इतिहास–ग्रन्थ की रचना की है। लेखक का मातृ–क्षेत्र होने के कारण बुन्देलखण्ड के प्रति स्वाभाविक लगाव ने सतत अध्ययन और अन्वेषण के क्रम में कई नवीन स्थापनाएँ दी हैं। जिनमें से महत्त्वपूर्ण हैं विन्ध्य के जंगलों में पौराणिक पुलिन्द–जाति की खोज एवं पुलिन्द, बोलिन्द, बुंदेल की स्थापना। भारतीय–संस्कृति की धरोहरों के इस क्षेत्र–विशेष का ऐतिहासिक अन्वेषण करते हुए लेखक ने बुन्देली–भाषा में प्रयुक्त कई स्थानीय शब्दों का भाषाशास्त्रीय विवेचन भी प्रस्तुत किया है। भारतीय इतिहास और संस्कृति को समग्रता में जानने के लिये ऐसे क्षेत्रीय–संधान आश्यक हैं।

लोकवार्ता, सम्पादक : डॉ० हरिसिंह पाल, डॉ० कवीन्द्र कुमार केसरी, प्रकाशक : लोकवार्ता शोध संस्थान, सोनभद्र (उत्तर प्रदेश), संस्करण : प्रथम, मूल्य 500/–रु० मात्र।

× × × लोकवार्ता शोध संस्थान के संस्थापक, पत्रिका सम्पादक, पत्रकार एवं लोकजीवन–संस्कृति के अन्वेषक, यायावर साहित्यकार डॉ० अर्जुन प्रसाद केसरी के 72वें जन्मदिन पर अभिनन्दन–ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत है 'लोकवार्ता' का यह अंक। शिखररस्थ विद्वानों के आलेखों से परिपूर्ण इस ग्रन्थ में लोक–संस्कृति, लोक–साहित्य, लोक–काव्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नाट्य, लोक–कला, लोक–विश्वास आदि विषयों पर स्तरीय निबन्ध संकलित हैं। लोक–जीवन के प्रत्येक अध्येता के लिये पठनीय एवं संग्रहणीय है यह ग्रन्थ।

संवेदना के विविध आयाम, सम्पादन : प्रमोद शाह, प्रकाशक : मोहनलाल–सरस्वती देवी शाह फाउण्डेशन, पहला तल्ला, 14, चाँदनी चौक स्ट्रीट, कोलकाता–700 072, संस्करण : प्रथम–2010/संस्करण संशोधित–2011।

× × × कीर्तिशेष स्वनामधन्य रेवती लाल शाह (1935–2003) के जीवन–जगत के स्मृति बिम्बों के बीच उनके वैज्ञानिक–चिन्तन, दार्शनिक–मनोभूमि, आध्यात्मिक विचार–यात्रा, भाषायी और साहित्यिक–अभिरुचि का एकत्र दस्तावेज है यह स्मृति–ग्रन्थ। ग्रन्थ के सम्पादक प्रमोद शाह ने बड़े ही मनोयोगपूर्वक सूक्ष्मतम विवरणों की पड़ताल करते हुए इस ग्रन्थ को प्रस्तुत किया है। जिससे यह ग्रन्थ केवल व्यक्ति–विशेष का संस्मृति–आलेख न होकर सांस्कृतिक–व्यापकता की एकत्र धरोहर बन गया है।

भक्तिरासो (संक्षिप्त), लेखक : दिलीप सिंह 'चन्दज', सम्पादक : फतह सिंह लोढ़ा, प्रकाशक : यतीन्द्र साहित्य सदन, भीलवाड़ा, राजस्थान, संस्करण : प्रथम, मूल्य 80/–रु० मात्र।

× × × कवि राव दिलीप सिंह 'चन्दज' कृत 'भक्ति रासो' पर मीरा–चरित्र के रौद्र–पक्ष का उल्लेख प्रस्तुत पुस्तिका में करने का प्रयास किया गया है। मेड़ता के उमराव रत्नसिंह की बेटी मीरा के स्वाभिमान, विद्रोही क्षात्रतेज से सम्बद्ध प्रसंगों की खोज के साथ लेखक ने उनके भक्त–चरित्र का साम्य स्थापित करने का प्रयास किया है।

वीर सावरकर और गाँधी जी : एक तुलनात्मक अध्ययन, लेखक : बालाराव सावरकर, प्रकाशक : हिन्दू राज्य प्रकाशक, नागपुर, मूल्य 20/–रु० मात्र।

× × × प्रस्तुत पुस्तिका में लेखक ने वीर सावरकर और महात्मा गाँधी की अन्तर्दृष्टि, वैचारिक मतभेद एवं कार्यपद्धति के विरोध का तात्विक विश्लेषण किया है।

राष्ट्रभाषा (जून 2011), प्रधान सम्पा० : अनंतराम त्रिपाठी, प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा–442003

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 12 जुलाई–अगस्त 2011 **अंक : 7–8**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी–174/2009–11
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी–221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)